तपस्वी सम्राट

(परम पूज्य आचार्य सन्मति सागर जी महाराज की जीवनी)

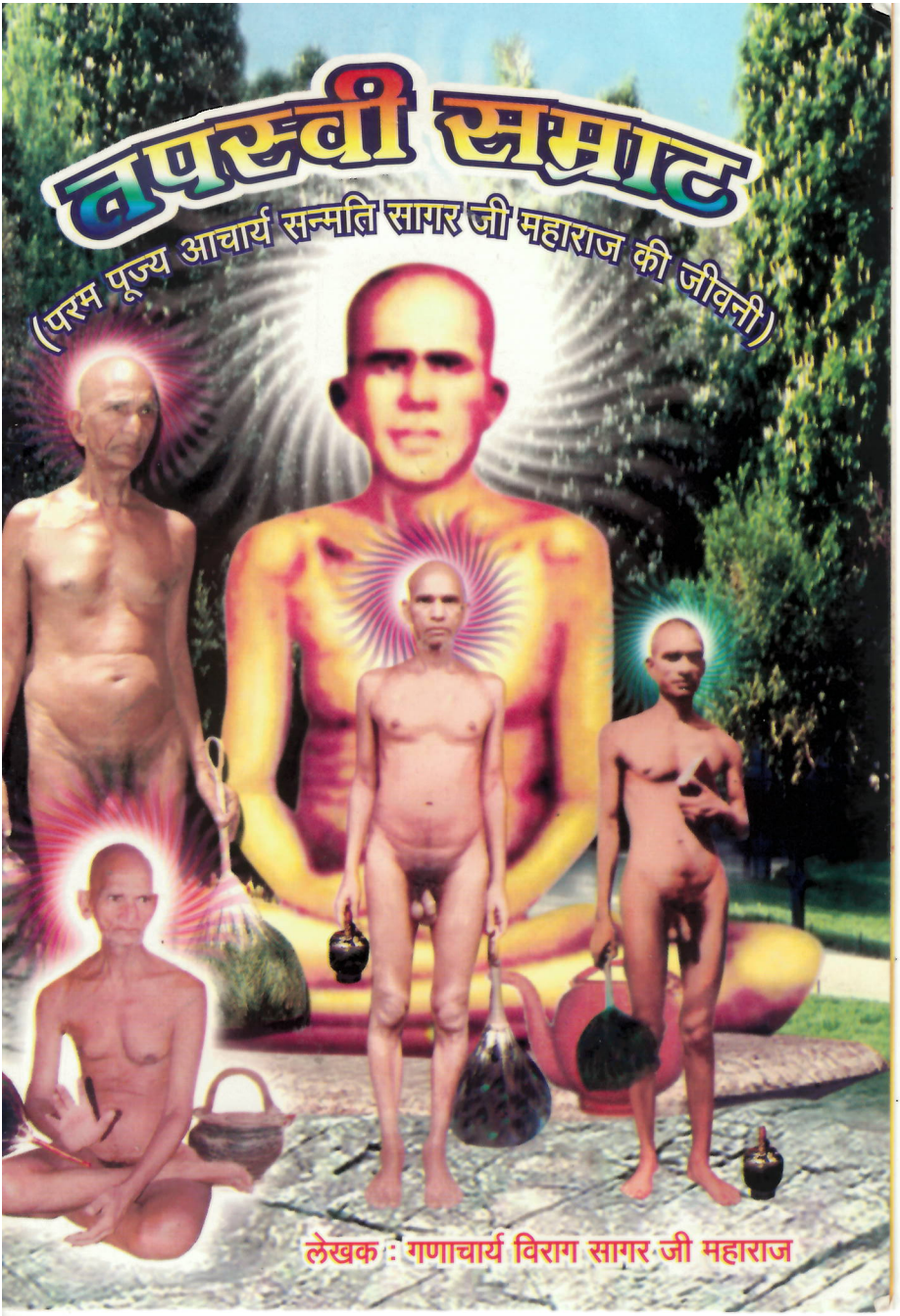

लेखक : गणाचार्य विराग सागर जी महाराज

दुर्लभ चतुर्विध संघ दर्शन उदगांव, कुंजवन (महाराष्ट्र) पावन वर्षायोग २००७

परम पूज्य मुनि कुंजर १०८ आचार्य श्री आदिसागरजी (अंकलीकर) परंपरा के तृतीय पट्टाचार्य,
परम पूज्य तपस्वी सम्राट १०८ आचार्य श्री सन्मतिसागरजी, परम पूज्य उपसर्ग विजेता १०८ गणाचार्य श्री विरागसागरजी,

तपस्वी सम्राट

(परम पूज्य आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज की जीवनी)

– लेखक –

गणाचार्य विराग सागर

– संकलन –

ब्र. मैनाबाई

– प्रकाशक –

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

भिण्ड (म. प्र.)

प्रसंग - परम पूज्य तपस्वी सम्राट महा तपोमार्तण्ड आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज के

"46 वें दीक्षा दिवस"

के शुभ अवसर पर

कृति - तपस्वी सम्राट

लेखक - गणाचार्य विराग सागर

संकलन- ब्र. मैना बाई (संघ संचालिका - प.पू. आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज)

संस्करण - I, 2007 कुंजवन (उदगांव) महा.

प्रति - 5000

पुण्यार्जक - 1. श्री रिखबचन्द अजीत कुमार कासलीवाल, सेलम

2. श्री सुबोध चंद्र शैलेष कुमार जी पांड्या, जयपुर

3. आयचुकी देवी कासलीवाल
श्री भागचंद सौ. इचरज देवी, मोहनलाल, चैनराज, पवन कुमार, धनराज एवं समस्त कासलीवाल परिवार, इचलकरंजी

पुनः प्रकाशन हेतु - 15 रुपये

प्रकाशक - श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ भिण्ड (म. प्र.)

परम पूज्य मुनिकुञ्जर आचार्य श्री 108 आदि सागर जी महाराज (अंकलीकर)

जन्म -

भाद्र शुक्ला 4 वि. सं. 1923, 4 सितम्बर 1866, अंकली

मुनि दीक्षा -

मगशिर सुदी 2 वि. सं. 1970, सन् 1913 कुंथलगिरि

आचार्य पद -

ज्येष्ठ शुक्ला 5, वि. सं. 1972, 17 जून 1915, काडगेमला जयसिंगपुर

समाधि -

फाल्गुन कृष्णा 13 वि. सं. 2000, 21 फरवरी, 1944 कुंजवन

समाधि सम्राट परम पूज्य

आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति जी महाराज

जन्म -

वैशाख वदी 9 वि. सं. 1967, सन् 1910, फिरोजाबाद

मुनि दीक्षा -

फाल्गुन सुदी 11 वि. सं. 2000, 17 मार्च सन् 1943, ऊदगांव

आचार्य पद -

आसोज सुदी 10 वि. सं. 2000, सन् 1943, ऊदगांव

समाधि -

माघ वदी 6 वि. सं. 2028, 6 जनवरी 1972, मेहसाना

परम पूज्य वात्सल्य दिवाकर
आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज

जन्म -

आसोज वदी 7 वि. सं. 1972, सन् 1915, कोसमाँ

मुनि दीक्षा -

फाल्गुन सुदी 13 वि. सं. 2009, सन् 1952, सोनागिर

आचार्य पद -

मगशिर वदी 2 वि. सं. 2018, सन् 1960, टूण्डला

समाधि -

पौष कृष्णा 12 वि. सं. 2051, 29 दिसम्बर 1994, सम्मेदशिखरजी

तपस्वी सम्राट परम पूज्य आचार्य
श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज

जन्म -

माघ शुक्ला 7 वि. सं. 1995 सन् 1938 फफोतू

मुनि दीक्षा -

कार्तिक शुक्ला 12 वि. सं. 2019 सन् 1962 सम्मेद शिखर

आचार्य पद -

माघ वदी 3 वि. सं. 2029, 3 जनवरी 1972 मेहसाना

वंदना पुष्प.....

परम पूज्य मुनिकुञ्जर आचार्य आदि सागर जी अंकलीकर महाराज की परंपरा के तृतीय पट्टाचार्य परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज के ''46 वें मुनि दीक्षा दिवस'' के पुनीत अवसर पर उनके जीवन परिचय की दर्शायिका तपस्वी सम्राट कृति का प्रकाशन हो रहा है, इसकी मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है।

साथ ही मैं इसके लिए आभारी हूँ परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की, जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के जीवन पर विभिन्न बिन्दुओं को अपनी लेखनी से प्रकाशित किया तथा मुझे इनके संकलन का अवसर प्रदान किया।

द्वय आचार्य के चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक बारम्बार नमोऽस्तु करती हुई प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि पूज्य गुरुदेव चिरायु हों व अपनी साधना और तपस्या से रत्नत्रय मार्ग को आलोकित करते हुए भव्य जीवों का मार्ग प्रदर्शित करें तथा अन्त में स्वयं भी मोक्ष महल को प्राप्त करें।

ब्र. मैना बाई

(संघ संचालिका)

कुंजवन-उदगांव

सन्मत्याष्टकं

- गणाचार्य विराग सागर

श्री महावीर कीत्याग्रः, पट्टस्य त्याग मूर्तये ।
भारत गौरवाचार्यः ! वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 1 ॥
अध्यात्म योग सम्पन्नः, श्रुत सिद्धान्त पारगः ।
धर्म प्रभावकः सूरि, वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 2 ॥
महोपसर्ग जेताय, दया धैर्य गुणाः गणी ।
परिषहादि जेतारं, वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 3 ॥
रत्नत्रय गुणाः लीनः, योग ध्यान सुनिश्चलः ।
करुणा मूर्ति आचार्यः ! वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 4 ॥
आत्म कल्याणकः योगी, जिनधर्म प्रभावकः ।
श्रमण रत्नमाचार्यः ! वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 5 ॥
निवसति दया नेत्रौ, कर्णोः जिनश्रुत सदा ।
हृदये जिनदेवाश्च, वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 6 ॥
निर्भयं च निराद्वंदं, निर्वेदकः निरामयः ।
मोक्षमार्गे रतः पूज्य, वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 7 ॥

दूरदर्शी ! सुगम्भीरः ! भव्य बन्धु ! अकारेणः ।
धर्म संबल दातारं, वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 8 ॥
मोक्षमार्ग प्रदातारं, हस्तावलम्बेन महद् ।
'विरागः' शोभते येन, वन्दे सन्मति सागरम् ॥ 9 ॥
विद्या बुद्धि महालक्ष्मी, सन्मत्याष्टकं संस्तुतिम् ।
भक्त्या पठितयो भव्यः, लभन्ते पूर्ण सन्मतिं ॥ 10 ॥

❑

जीवन के झरोखे में

परम पूज्य आध्यात्म योगी सम्राट, सिद्धान्त चक्रवर्ती, महा तपोमार्तण्ड तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी ...

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवः न ही सर्वत्र, चन्दनं न वने वने॥

जैसे हर पर्वत पर हीरा, माणिक्य प्राप्त नहीं होते, प्रत्येक हाथी के मस्तक से गजमुक्ता की प्राप्ति नहीं होती है प्रत्येक वन में चन्दन की उपलब्धि नहीं होती उसी प्रकार संत साधु महात्मा सर्वत्र नहीं होते, पर फिर भी इस कलिकाल में, वैज्ञानिक युग में जहाँ चहुँ ओर भौतिकता की चकाचौंध फैली हुई है वहाँ कही बिरले ही स्वोपकारी, मानव कल्याणकर्त्ता, पतित को पावन बनाने वाले महापुरुष इस भूमण्डल पर उदित होते हैं इन महापुरुषों की श्रृंखला में परम पूज्य मुनि कुंजर 108 आचार्य श्री आदि सागर जी महाराज (अंकलीकर) की परम्परा में तृतीय पट्टाचार्य परम आराध्य, रत्नत्रय धारक, तीर्थोद्धारक, संघनायक, करुणा के सागर, वात्सल्य मूर्ति, तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी हुये।

आचार्य श्री का जन्म, बाल्यकाल एवं शिक्षा - आचार्य श्री का जन्म माघ शुक्ला सप्तमी सं. 1995 में तारीख 27-2-1938 शुक्रवार को एटा जिले के फफोतू ग्राम पद्मावती पोरवाल परिवार में हुआ। पिता का नाम श्री प्यारे लाल सेठ जी जो परम धर्मात्मा, जिन भक्त, जिनवाणी के उपासक और गुरुओं की सेवा में तत्पर रहते थे आपकी माता का नाम जयमाला जो शीलवन्ती, भोली-भाली, सरल स्वभाव वाली और धर्मपरायण होने के कारण पुण्योदय से आपका जन्म उनकी कोख से हुआ। आपका नाम ओमप्रकाश रखा गया। आपका एक बड़ा और एक छोटा भाई भी था अर्थात् आप तीन भाई और पाँच बहिनें थे।

जन्म के समय ज्योतिषियों ने घोषणा की थी कि "यह बालक लोकोत्तर कार्य करेगा, घर निवासी नहीं वन निवासी बनेगा, अध्यात्म प्रिय होगा, सर्वोच्च पद प्राप्त करेगा, सम्पूर्ण भारत वर्ष में धर्म का डंका बजायेगा, चतुर्थ काल समयोगी, तपस्वी होगा आदि। सच कहा है कि - "ललना के पाव पालना में दिखते है।"

आपने 9 वर्ष तक अध्ययन अपनी जन्म भूमि फफोतू में किया और विशेष अध्ययन के लिए 'एटा' अपनी बहिन श्रीमति विट्टोदेवी

(जिन्होने कालान्तर में आप (पूज्य आचार्य श्री सन्मति सागर जी) से ही आर्यिका दीक्षा ली और आर्यिका नेमिमति के नाम से प्रसिद्ध हुई।) के यहाँ लौकिक शिक्षा एटा के वर्णी विद्यालय में बी. ए.तक की साथ ही आप धार्मिक पढ़ाई भी किया करते थे। वैदिक धर्मानुसार आपने ''प्रभाकर'' की परीक्षा पास की। डिग्रियाँ भी प्राप्त हुई परन्तु आपका मन संसार के कार्यों में रुचि नहीं लेता था। जब आप लगभग 9 वर्ष की आयु में थे तब आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। कुछ घरेलू जिम्मेदारियों के कारण आपने मलेरिया डिपार्टमेन्ट में काम करना प्रारम्भ किया।

विवाह का प्रस्ताव - जब आपकी माँ ने विवाह करने का प्रस्ताव रखा तो आपने साफ इंकार कर दिया कि हम विवाह नहीं करेंगे विवाह करने से संसार ही बढ़ता है आदि।

वैराग्य की ओर - जब आगरा में परम पूज्य आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति जी महाराज का संघ आया तब आप दर्शनार्थ गए। आचार्य श्री से आशीर्वाद और धर्मश्रद्धा प्राप्त की। हृदय में कुछ न कुछ व्रत धारण करने की भावना प्रकट की। फिर आचार्य श्री से प्रार्थना की, कि हे स्वामी ! मुझे भी कुछ न कुछ व्रत दीजिए, जिससे मैं आत्म हित कर सकूँ। परम पूज्य आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति

जी महाराज ने आपके गुणों को पहचान लिया और ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए प्रेरित किया तथा कहा कि संसार परिभ्रमण को रोकने में यही समर्थ है। आपने भरी जवानी में सहर्ष संवत् 2018 में उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया।

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमल सागर जी 1960 का चातुर्मास टूंडला जिला एटा में हो रहा था तब आप दर्शनार्थ गये थे और आपके मन में परम पूज्य आचार्य श्री को आहार दान देने के भाव जाग्रत हुए अतः आपने आजीवन शूद्र जल का त्याग कर दिया। चातुर्मास के बाद आपने संघ के साथ ही विहार करने का निर्णय लिया किन्तु परिवार के लोग आपको जबरदस्ती ले गये। फिर आपने पुनः पुरुषार्थ किया।

सन् 1961 में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमल सागर जी का मेरठ में चातुर्मास चल रहा था उसी समय आप मेरठ आ गये और आषाढ़ शुक्ला दूज 1961 में दो प्रतिमा के व्रत धारण किये एवं आषाढ़ शुक्ला अष्टमी को आपने सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किये और आपका नाम ब्रह्मचारी कुलभूषण रखा गया।

क्षुल्लक दीक्षा - आपकी क्षुल्लक दीक्षा श्रावण शुक्ला अष्टमी सन् 1961 मेरठ नगर में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमल सागर

जी महाराज के कर कमलों से हुई, तब आपका नाम पूज्य क्षुल्लक 105 नेमी सागर जी रखा गया। क्षुल्लक दीक्षा लते ही आपने नमक, तेल, दही का आजीवन त्याग कर दिया।

मुनि दीक्षा - आपकी मुनि दीक्षा कार्तिक शुक्ला द्वादशी, शुक्रवार सं 2019 सन् 1962 में 24 वर्ष की उम्र में श्री सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज के कर कमलों से हुई और आपका नाम मुनि श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज रखा गया।

दादा गुरु से मिलन - श्री सम्मेदाचल से संघ का विहार अनेक क्षेत्रों की वन्दना करता हुआ बाराबंकी पहुँचा वहाँ के भक्तों की भक्ति, श्रद्धा व प्रार्थना पर चातुर्मास बाराबंकी में निश्चय हुआ, चातुर्मास के पश्चात् संघ विहार कर बावनगजा सिद्धक्षेत्र पर पहुँचा। तीव्र पुण्य के उदय से परम पूज्य मुनिकुंजर आचार्य श्री 108 आदि सागर जी (अंकलीकर) के द्वितीय पट्टाधीश परम पूज्य तीर्थ भक्त शिरोमणि आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति जी महाराज भी ससंघ चातुर्मास करने को पधारे। गुरु शिष्य का यह सम्मेलन अनोखा था। आपने अपने दादागुरु के दर्शन कर मन ही मन उनके चरण सानिध्य में रहने और अनुभवात्मक अध्ययन करने का निश्चय कर लिया।

बड़ी प्रभावना के साथ चातुर्मास सम्पन्न हुआ और आपने पूज्य गुरुदेव की आज्ञा लेकर परम पूज्य आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति जी महाराज के साथ विहार किया।

लगी लगन अब पढ़ने की - अब आप पूर्ण लगन, श्रम और भक्ति से परम पूज्य आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति जी गुरुदेव के सानिध्य में आगम, आध्यात्म ग्रन्थों के साथ-साथ यंत्र-मंत्र, ज्योतिष्क आदि ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे। साथ ही आपने समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, सर्वार्थसिद्धि, तत्वार्थ राजवार्तिक, त्रिलोक सार, तिलोयपण्णत्ति आदि चारों अनुयोगों के साथ, न्याय, छंद, अलंकारादि का भी अध्ययन किया।

हृदय स्पर्शी वियोग - सन् 1971 का चातुर्मास गिरनार में हुआ और गिरनार से संघ विहार कर अहमदाबाद पहुँचा। पौष मास था। सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी। यहीं पर आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति जी महाराज को शीत ज्वर ने घेर लिया। साथ ही 6-7 साधुओं को भी यही प्रकोप था, आचार्य श्री अपनी पूर्व घोषणानुसार विहार कर गये। ताप ज्वर चढ़ा ही था कलौल में पहुँचते-पहुँचते निमोनिया हो गया। आप अपनी साधना में दत्तचित्त व पूर्ण सावधान थे। आपने निर्णय किया कि अब जीवन इस क्षणिक शरीर में नहीं रह सकेगा।

अतः माघ वदी 3, तारीख 3-1-72 को चतुर्विध संघ को एकत्रित कर आपने निश्चित घोषणा की कि अब हमारा आत्मा इस शरीर का परित्याग करेगा, मैं अपने सारे उत्तर दायित्व इस आचार्य पद के साथ मुनि श्री 108 सन्मति सागर जी को प्रदान करता हूँ आज से ये आपके आचार्य है ये शिक्षा, दीक्षा, दण्ड-प्रायश्चित्तादि देने की कुशलता रखते हैं, संघ अब इनके नेतृत्व में रहेगा। आप सब मिलकर यहाँ से एक बार सम्मेद शिखर जाना। संघ सुदृढ़ रहे तदर्थ हम मुनि श्री नेमि सागर जी को प्रवर्तक, मुनि श्री कुंथु सागर जी को गणधर, मुनि श्री संभव सागर जी को स्थविर और आप सबको शिक्षा प्रदान करने के लिए आचार्य पद जिन्हें प्रदान किया है उन्हीं को उपाध्याय पद भी देता हूँ। तथा आर्यिका संघ की विशेष व्यवस्थार्थ गणिनी पद श्री 105 आर्यिका विजयामति को देता हूँ। अब आपकी यही व्यवस्था रहेगी।

इस प्रकार सर्व विकल्प जालों से मुक्त, निराकुल होकर महामंत्र पंचपरमेष्ठी वाचक णमोकार मन्त्र जप करते हुए अति प्रमोद से आत्म चिंतन के साथ माघ वदी तारीख 6-1-1972 को सायं प्रथम रात्रि 9.15 मि. पर मरण का वरण किया।

आचार्य पद प्रतिष्ठापन समारोह - क्षेत्रों की वंदना करता हुआ संघ उदयपुर पहुँचा और वहाँ पर आचार्य पद प्रतिष्ठापन समारोह मनाने का निर्णय हुआ। लाखों जैन-जैनेतर समाज के मध्य फाल्गुन शुक्ला 2 सन् 1972 के दिन शुभ लग्न में यह समारोह सम्पन्न हुआ और आप आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी की प्रतिमूर्ति रुप में उनके तृतीय पट्टाधीश के नाम से विख्यात हुए।

1. **उपाधियाँ** - पूज्य आचार्य श्री के तप, त्याग, परिषह, स्वाध्याय शीलता, वात्सल्य और आपकी अध्यात्म साधना से प्रभावित होकर आपको उपहार स्वरुप समाज, विद्वानों एवं श्रेष्ठियों ने अनेक उपाधियों से अलंकृत किया है।

वि. सं.	सन्	स्थान	पदवी
2034	1977	इटावा (म. प्र.)	अध्यात्म योगी सम्राट
	1977	भिण्ड (म. प्र.)	आचार्य रत्न
	1978	जबलपुर(म. प्र.)	चारित्र चक्रवर्ती
	1982	दाहोद (गुज.)	भारत गौरव
		खण्डवा	धर्म दिवाकर
		ऋषभदेव	तपस्वी सम्राट

वि. सं.	सन्	स्थान	पदवी
		अजमेर	सिद्धांत चक्रवर्ती
	1994	जयपुर	अद्भुत योगी संत
	1995	दिल्ली	महा तपो विभूति
			श्रमणराज
2055	1998	चम्पापुर(बि.)	श्रमण चक्रवर्ती
	1998	पटना	चारित्र चूड़ामणि
2060	2003	उदयपुर	महा तपोमार्तण्ड
		कोटा (राज.)	वात्सल्य रत्नाकर

2. परीषह जयी -

क्षुधा परीषह - 1. आचार्य वर्धन व्रत, 2. मुक्तावली व्रत, 3. रत्नत्रय व्रत, 4. अष्टान्हिका व्रत, 5. रत्नावली व्रत, 6. कवलचन्द्रायण व्रत, 7. सप्रकुम्भ व्रत, 8. पंचकल्याणक व्रत, 9. जिनगुण सम्पत्ति व्रत, 10. णमोकार पैंतीसी व्रत, 11. पल्य व्रत, 12. चारित्र शुद्धि व्रत, 13. दशलक्षण व्रत, 14. सर्वतोभद्र व्रत, 15. सोलहकारण व्रत, 16. सिंहनिष्क्रिड़ित व्रत, 17. आचाम्ल व्रत, 18. जिनसहस्त्र नाम व्रत

जैसे कठिन व्रतों को अनशन से करने वाले तथा प्रत्येक चातुर्मास में 1 आहार एक उपवास के साथ कभी-कभी प्रथम माह में 1 आहार 1 उपवास, द्वितीय मास में 2 उपवास और तृतीय मास में 3 उपवासों तथा चतुर्थ मास में 4 उपवासों के बाद पारणा करने वाले, तथा प्रत्येक चातुर्मास में दशलक्षण के 10 तथा तीनों अष्टान्हिका के 8-8 उपवास करने वाले आजीवन के लिए सालों से अन्नादि खाद्य लेह्य आदि का त्याग होने से आप क्षुधा परीषहजयी है।

पिपासा परीषह - उपवासों में पूर्णता जल का भी त्याग होने के साथ आपने रांची चातुर्मास के दौरान 6 माह के लिए तथा इटावा चातुर्मास के दौरान आपने 2 माह के लिए जल का भी त्याग किया था, अतः आप पिपासा परीषहजयी है।

शीत परीषह - आप कड़ाके की ठण्डी के दिनों में मात्र थोड़ी सी घास का ही उपयोग करते हैं और घण्टों ठण्डी में बैठकर सामायिक ध्यान करने में आप निपुण है। आपका दीक्षोपरांत से ही चटाई का त्याग है अतः आप शीत परीषहजयी है।

ऊष्ण परीषह - पूज्य आचार्य श्री 108 भरत सागर जी महाराज ने आपको सम्मेद शिखर जी में ग्रीष्मकाल में जलती-तपती जमीन

में खुली छत पर घण्टों तक अचल सूर्य की ऊष्णता को सहते देखा है अतः आप ऊष्ण परीषहजयी है।

दंशमशक परीषह - रांची चातुर्मास और सम्मेद शिखर जी चातुर्मास में रात्रि के समय ध्यान करते हुये आप एक साथ हजारों की संख्या में बड़े-बड़े दंशो-मच्छरों के शरीर में बैठने पर भी आपको उसकी वेदना को भेदविज्ञान के बस से सहन करते देखा है अतः आप दंशमशक परीषहजय में कुशल साधक हैं।

नग्न परीषह - परम दिगम्बर जैनेश्वरी मुद्रा ही आपके नग्न परीषहजय को निर्विकार बालकवत् स्पष्ट दर्शाती है।

अरति परीषह - आपको अपने विरोधी-अपकारियों के प्रति क्षमाभाव को तथा प्रतिकूल सामग्री के संयोग होने पर साम्यरूप - भाव को धारण करते देखा है अतः आप अरति परीषहजयी अलौकिक संत है।

स्त्री परीषह - धन्य है आपकी उत्कृष्ट चिंतवन धारा कि आपको स्त्रियाँ स्त्री रुप में नहीं बल्कि, सभी आत्मा रूप में दृष्टिगोचर होती है और उनके रूप देखने में मानो आप नेत्रहीन ही है।

निषद्या परीषह - आप एक ही आसन से घण्टों साधना में संलग्न रहते है, पीड़ा होने पर भी आसन को स्थिर रखते है।

3. तप - परम पूज्य आचार्य श्री तप की मूर्ति है आपने अनेक व्रतों को कर लिया है और भी कर रहे हैं। वो भी उपवास के साथ किये आपने अभी तक- 1. चारित्र शुद्धि व्रत (1234), 2. मुक्तावली व्रत (50), 3. सिंहनिष्क्रिड़ित (बड़ा वाला) व्रत (153), 4 आचार वर्धन व्रत (100), 5 जिनसहस्रनाम व्रत (1008), 6. रत्नावली व्रत (300), 7. पंचकल्याणक व्रत (120), 8. जिनगुण सम्पत्ति (63), 9. णमोकार पैंतीसी (35), 10. आचाम्ल धनव्रत, 11. सप्त कुम्भ व्रत, 12. निरिकृत व्रत, 13. सोलह कारण व्रत, 14. रत्नत्रय व्रत 13 वर्ष, 15. कवल चन्द्रायण व्रत (2 उपवास क्रमशः 1, 2, 3 आदि ग्रास फिरघटते क्रम से 14, 13, 12 आदि ग्रास अर्थात् 1 माह का व्रत) 16. सर्वतोभद्र (75) सन् 1979 जबलपुर चातुर्मास से दशलक्षण 1 शाखा के 10 अर्थात् सन् 1979 से 2007 तक 17. दशलक्षण के (290) और अष्टान्हिक व्रत तीनों शाखा के सन् 1988 से सन् 2007 तक 18. अष्टान्हिक व्रत के उपवास (480), 19. पल्य व्रत (48 उपवास, 4 तेला, 7 बेला = 74 उपवास)

आपने दाहोद, भिण्ड व बड़वानी के चातुर्मास में -

आषाढ़ में 1 उपवास 1 आहार, श्रावण में 2 उपवास 1 आहार,

भाद्रपद में 3 उपवास 1 आहार, कुवार में 4 उपवास 1 आहार, बड़वानी चातुर्मास में जब पाँच माह का चातुर्मास हुआ तो भी आपने 5 वें माह में 5 उपवास 1 आहार किया।

इतने उपवास करने के साथ-साथ आप सतत् खड्गासन तथा कायोत्सर्ग मुद्रा में घंटों ध्यान करते है। आप कभी भी चटाई का प्रयोग नहीं करते हैं एक बार आप ग्रीष्म काल में चिलचिलाती-तपती जमीन में खुली छत पर 3-4 घंटों तक अचल खड़े रहे। तप के कारण ही आप तपस्वी सम्राट के नाम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

4. **त्याग** - पूज्य आचार्य श्री त्याग के हिमालय है आपका सारा जीवन त्यागमय है। आपने सन् 1961 मेरठ में चार प्रकार रस का (नमक, घी, दही, तेल) त्याग किये हुये 47 वर्ष हो गये है। और 1963 में शिखरजी में मुनि दीक्षा के समय शक्कर का त्याग कर दिया था अर्थात् 45 वर्ष से शक्कर का त्याग है। आपने कलकत्ता में 1973 में अनाज का आजीवन त्याग कर दिया था आपको अन्न का त्याग किये हुये 35 वर्ष हो चुके। आपने सन् 1997 शिखरजी में दूध का त्याग कर दिया था अर्थात् 11 वर्ष दूध के त्याग के हो चुके हैं आपने 2002 पावागढ़ में मट्ठा और गन्ने के रस को छोड़कर सभी

प्रकार की हरी का त्याग कर दिया था और 2003 सलूम्बर में गन्ने का भी त्याग कर दिया।

सम्मेद शिखर जी में चार महीने (चातुर्मास) में केवल उबली सब्जियाँ और 2 पदार्थ ही लिये। इटावा चातुर्मास के अवसर पर 2 माह जल का त्याग किया। मथुरा के चातुर्मास में आपने 1 माह तक आहार में मात्र मूंगफली ली और कुछ नहीं। रांची के चातुर्मास काल में 6 माह पानी बिना पिये रहे, पानी का भी त्याग किया।

पूज्य आचार्य श्री सोते समय चटाई का भी प्रयोग नहीं करते है मात्र थोड़ी सी घास (सुखी हुई) अथवा पाटा ।

5. गुणों के पुञ्ज- आदि प्रभु से लेकर वीर प्रभु के द्वारा प्रवाहमान जिन शासन की यशकीर्ति को गौतम गणधर से लेकर कुन्द-कुन्दाचार्य जैसे महान आचार्यों ने चारों ओर फैलाया है। उसी क्रम परम्परा में परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज भी एक महान साधना प्रिय आचार्य है जो गुणों के पुञ्ज है। गुणों का वर्णन अशक्य होता है फिर भी उनके गुणों पर प्रकाश डालने का छोटा सा प्रयत्न है -

सेवाभावी - एक बार आषाढ़ मास के आने पर वर्षा प्रारंभ हो गई और साधुओं को ज्वर ने घेर लिया। तब परम करुणावान आचार्य

श्री जो दूसरे जीवों का दुख देख नहीं सकते, तथा कष्ट पीड़ित जीवों को आप सहयोग करने में सदैव आगे रहते हैं साधकों के कष्ट दूर करने के लिए स्वयं वैयावृत्ति में तत्पर हो गये। अतः किसी साधु के रोगग्रस्त हो जाने पर आपके द्वारा की जाने वाली साधुओं की वैयावृत्ति वात्सल्य अंग की परिचायक अनुकरणीय है।

आपने डोली वाले न होने पर रुग्ण साधुओं की डोली भी कुछ समय के लिए वहन की। आपने इसमें तनिक भी अपमान या सम्मान का अनुभव नहीं, अपितु कर्त्तव्य पालन का आनन्दानुभव ही किया।

सुदृढ़ मनोबली - आप सुदृढ़ मनोबली है जो कार्य, जिस समय, जिस स्थान पर, करने का निर्णय लिया, उसे यथावत् सम्पन्न करके ही विश्राम लेते है। उपसर्ग और बाधाओं की परवाह नहीं करते हैं। रांची के चातुर्मास में जिस जिनालय में आपका वास्तव्य था वहाँ मच्छरों का उपद्रव बड़ा भयंकर था फिर भी आपने स्थान परिवर्तन नहीं किया। ध्यान करते समय हजारों मच्छर एक साथ शरीर को काटते रहते पर आप मेरुवत् अचल शांत मुद्रा में ज्यों के त्यों स्थिर रहे, मानों शरीर लकड़ी का ढांचा हो। उपयोग की निश्चलता आपकी उत्कृष्ट भेद विज्ञान की शक्ति को व्यक्त करती है। सुदृढ़ शरीर वैराग्य और तत्व ज्ञान को भी प्रगट करती है।

श्री सम्मेदशिखर जी 13 पंथी कोठी के मान स्तंभ की कटनी पर आप रात्रि में विश्राम लेने के पश्चात् ध्यान करते थे, वहां भी बड़े-बड़े डांस थे फिर भी आप अचल 2-3 घण्टों तक बैठे रहते, मानों आप पीड़ा का वेदन करते ही नहीं। अतः भेद विज्ञान की परिभाषा यदि हमें प्रत्यक्ष देखनी है तो पुस्तकों में नहीं आपकी तपश्चर्या में देखने मिली।

सच्चे समय पाबंद साधक - एक बार पहाड़ी धीरज, दिल्ली में 26 जनवरी को पूज्यनीय आचार्य श्री की जन्म जयंति का कार्यक्रम था, पूज्य आचार्य श्री ने कहा - मैं सामायिक के समय सभा में बिल्कुल नहीं रहूंगा, प्रातः काल में कार्यक्रम चालू हुआ 11.30 हो गये, पूज्यनीय आचार्य श्री ने घड़ी की तरफ संकेत किया किंतु लोगों ने और समय मांगा, पूज्य आचार्य श्री ने मुस्कुराते हुए कहा - "मैं आहार का समय छोड़ सकता हूँ, लेकिन सामायिक का समय नहीं" पूज्य आचार्य श्री सभा से उठकर अपने कमरे की ओर जाने लगे, लोगों ने पैर पकड़ लिये, नहीं जाने दिया। पूज्य आचार्य श्री ने सिंहासन पर खड़े होकर सामायिक प्रारंभ कर दी, जनता की तरफ पीठ कर ली, सब लोग आश्चर्य में पड़ गए और कहने लगे आज वर्तमान में अपने कर्तव्यों के प्रति उत्सुक, समय का पाबंद सच्चा

साधु यही है। नागपुर में प्रवचन के समय एक माइक वाला पुजारी था प्रवचन शुरु हो गया।

अपूर्व निर्भयता - विहार काल में बनारस से लखनऊ जाते समय संघ एक टूटी फूटी धर्मशाला में रात्रि विश्राम के लिए ठहरा, वहाँ प्रकाश की व्यवस्था नहीं थी, अंधेरा था। सभी साधु सामायिक कर रहे थे तभी आस-पास से अनेक बिच्छू आकर वहाँ इकट्ठे हो गये। दर्शनार्थियों ने टॉर्च जलाई तो दीवार पर चलते हुए अनेक बिच्छू दिखे। पूज्य आचार्य श्री के पाटे के नीचे पांच बिच्छू दिखे। दर्शकगण घबरायें और साधुओं को अन्यत्र ले जाने की चेष्टा करने लगे। पर पूज्य आचार्य श्री निर्विकल्प होकर पूरी रात वहीं पाटे पर विराजमान रहे, बिच्छू भी वहीं मौजूद रहे, पर किसी को कोई पीड़ा नहीं पहुंचाई। यह घटना भी आपकी निर्भयता, धृतिबल और आत्म विश्वास का परिचय देती है।

निर्ममत्वी गुरुवर - एक बार फिरोजाबाद में जब आचार्य श्री अस्वस्थ्य हो गये तो कुछ श्रावकगण वैद्य को बुलाकर ले आये। पर पूज्य आचार्य श्री ने नाड़ी दिखाने से मना कर दिया, तब लोगों ने एक रास्ता निकाला कि वैद्य जी को रात्रि में वैयावृत्ति करने के लिए भेज देंगे। उसी समय वैद्य जी नाड़ी देख लेंगे। रात्रि में वैद्य जी आये

उन्होंने जैसे ही पूज्य आचार्य श्री का हाथ पकड़ा उन्होंने तुरंत हाथ हटा लिया। भयंकर पीड़ा होने पर भी आपने उपवासों को नहीं छोड़ा। उनके जैसा तपस्वी वर्तमान में कोई साधु नहीं।

अनुपम वैद्य - जब कभी बुखार-सर्दी-जुखाम होता था तो शिष्यगण-भक्तगण वैद्य जी को बुला लेते थे। तब आप कहते थे कुछ नहीं 1 उपवास करूंगा तो सर्दी-जुखाम ठीक हो जाएगा और तीन उपवास करूंगा तो बुखार अपने आप चला जाएगा। अतः पूज्य आचार्य श्री कितनी भी पीड़ा हो, ज्वर हो, कभी भी किसी से नहीं कहते हैं और न ही वैद्य को दिखाते, न ही दवा लेते है। सच है जिनका णमोकार मंत्र, ध्यान, उपवास, ज्ञान परमौषधि है उन्हें बाहरी औषधि की क्या आवश्कता ?

सच्चे शिक्षक - जयपुर में एक महिला चाँदी की माला बनवाकर लायी और संघस्थ साधुओं को बांटने के लिए पूज्य आचार्य श्री को निवेदन किया, तो पू. आचार्य श्री ने उत्तर दिया कि साधु को साधु जीवन में रहने दो, साधु अपरिग्रही है उन्हें चाँदी की माला की क्या आवश्यकता है। पूज्य आचार्य श्री अपने शिष्यों को भी हमेशा यह उपदेश देते हैं कि अपने पास हमेशा अत्युपयोगी एवं साधारण

मूल्यों वाली वस्तु ही रखिये ताकि उसके सम्हालने का अधिक विकल्प न रहें तथा उसके गुम हो जाने से संक्लेश परिणाम न हो सकें।

वात्सल्य मयी - नागपुर चातुर्मास में भीषण गर्मी का प्रकोप था, फिर भी आपने वहाँ दशलक्षण के 10 व अष्टान्हिका के 8 उपवास किये, उस समय संघ संचालिका मैना बाई घी-कपूर लगाने भेजती थी, पर वात्सल्य करूणा से भीगे गुरुदेव अपने मस्तक पर लगा घी अपने हाथों से अपने शिष्यों को लगा देते थे जिसका अतंराय या आहार ठीक नहीं हुआ हो। एक बार ऐसा ही हुआ कि जब हम (गणाचार्य विराग सागर) क्षुल्लक पूर्ण सागर थे, तो पूज्य आचार्य श्री रात्रि में उठकर हमारे पास आते थे और हमारे दुपट्टे को कमण्डल के पानी में गीला कर हमे ओढ़ा देते थे और अंतराय होता तो वे अपने सिर के घी को निकाल कर आशीर्वाद के साथ वह भी हमारे सिर पर लगा देते थे। ऐसा कई बार हुआ। अतः संघ के साधुओं के प्रति आपका वात्सल्य अनुशासन प्रिय पिता तुल्य है।

कुशल संघ संचालक - एक बार दुर्ग चातुर्मास के समय वहाँ के समाज के बच्चों-बच्चियों द्वारा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम रात्रि में चल रहा था। उसी समय कुछ महाराज जब छत पर लघुशंका के लिए आये, तो देखा यहाँ से प्रोग्राम दिख रहा है, बस क्या था वे

वहीं बैठ गये, प्रोग्राम देखने। कुछ समय पश्चात् पूज्य आचार्य श्री भी आये, उन्होने देख लिया ये लोग छुपकर प्रोग्राम देख रहे है, तब तो कुछ नहीं कहा, धीरे से निकल कर कमरे में आ गए। वे महाराज लोग भी पूरा प्रोग्राम देख कर कमरे में चले गये। सुबह हुआ दैनिक स्तुति-पाठ के पश्चात् पूज्य आचार्य श्री ने गंभीर वाणी में कहा, कल रात्रि में बिना आज्ञा अनुमति के कार्य कैसे हुआ, संघ का अनुशासन था कि सांस्कृतिक प्रोग्राम साधक जन नहीं देखते, फिर भी छुप-छुप कर प्रोग्राम देखा गया। शर्म नहीं आई आपको, यही सब देखना था तो दीक्षा क्यों ली, घर क्यों छोड़ा, देखते रहते घर में बैठकर, सभी की आंखें नीचे झुक गई। अतः पूज्य आचार्य श्री एक कुशल संघ संचालक है जो अहर्निश ध्यान रखते हैं कि हमारा कौन सा शिष्य कब क्या कर रहा है ? कहाँ है ? आदि।

निरंहकारिता - प्रायः पूज्य आचार्य श्री के विषय में सभी विद्वान साधक कहते हैं कि पूज्य आचार्य श्री इस शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ तपस्वी है उनकी तपश्चर्या को देखकर दर्शक का मन रोमांचित हो उठता है केवल आप तपस्वी सम्राट ही है ऐसा भी नहीं है वरन् वे सिद्धांत चक्रवर्ती भी है, सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, काव्य, छन्द, अंलकार, ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्रादि अनेक शास्त्रों के ज्ञाता हैं इतने गुणों से

सम्पन्न होने पर, बहुकाल से दीक्षित होने पर व गुरु प्रदत्त आचार्य परम्परा के आचार्य होने पर भी उनके समीप में कभी अहंकार मंडरा नहीं पाता। आप सर्व साम्राज्य सामान्य की भांति ही साधु व श्रावक जनों के मध्य विचरण करते हैं।

आश्चर्य है जहाँ थोड़ा सा ज्ञान साधना होने पर भी व्यक्ति प्रसिद्धि के शिखर पर चढ़ना चाहता है वहीं ये पूज्य गुरुवर एकांत में मौन साधना करना पसंद करते हैं।

निष्पृही साधक - परम पूज्य आचार्य श्री एक निस्पृही साधक है जो अपनी परिचर्या में कभी शिथिलता नहीं आने देते है एक बार 1 महिला ने बड़ी भक्ति भाव से निवेदन किया, महाराज श्री आप हमारे गाँव में 1 दिन और रुक जाइए। तो पूज्य गुरुवर ने मुस्कुराकर प्रमोद भाव में कहा - कि क्या कल इमरती खिलाने वाली है। इतना कहकर भक्ति पूर्व निवेदन पर आप रुक गये। योगायोग आपकी आहार विधि उसी महिला के घर मिल गई, और उसने भी इमरती बनाई थी। पर इमरती सारी रखी रह गई, महाराज श्री ने नीरस कर लिया। अतः इससे प्रतीत हुआ कि आप किसी भी प्रकार से अपनी चर्या में दोष नहीं लगने देते है।

गुरु भक्त शिष्य - पूज्य आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज

की समाधि महसाणा में चल रही थी तो उस समय आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज को शौच विसर्जन में बड़ी तकलीफ होती थी। वह बाहर नहीं निकलता था, तो पूज्य आचार्य सन्मति सागर जी उस समय उस मल को अपने हाथों से निकाला करते थे, जब कफ आता था तो बार-बार उठने में पूज्य आचार्य श्री को तकलीफ होगी अतः वे दोनों हाथों में थूकने का आग्रह करते और बाहर लाते थे। उन्हें इसमें ग्लानिभाव नहीं अपितु गुरु सेवा सौभाग्यभाव लगता था। धन्य है आपका श्रेष्ठ निर्विचिकित्सा अंग, वैय्यावृत्ति भाव, गुरु समर्पण का सच्चा भाव।

अनुपम धैर्यशीलता - एक बार जब आपने सिंहनिष्क्रिड़ित व्रत को धारण किया तो लगातार एक उपवास, 1 आहार, 2 उपवास एक आहार, तीन उपवास एक आहार, चार उपवास एक आहार ऐसे क्रम को बढ़ा कर जब 15 उपवास एक आहार तक पहुंच जाए तो फिर घटाकर इसी क्रम पर नीचे आना होता था। जब आपकी 15 उपवास के बाद पारणा हुई तो आपको वमन में खून का वमन आहार के उपरांत हो गया, सभी लोग घबरा गये, सभी भक्तगणों, संघस्थ साधुओं ने ठान लिया कि पूज्य आचार्य महाराज को आगे के उपवास नहीं करने देगें क्योंकि पुनः 15 उपवास करने थे सभी ने पूज्य महाराज

से बड़ा साहस बनाकर इस बात को रखा, पर आप तो दृढ़ मनोबली थे, जैसे सुमेरु पर्वत कभी प्रलय काल की भीषण वायु से प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार आप भी अचल रहे, आपने सुना तो पर कुछ नहीं कहा। पुनः मैनाबाई ने कहा पूज्य महाराज श्री यदि आप उपवास करेंगे तो हम सभी भी उपवास करेंगे। तो पूज्य महाराज श्री ने कुछ सोचा और कहा ठीक है, बहुत अच्छा है कि हमारे साथ आप लोग भी साधना करेंगे। अकेले से दो भले, सम्बल, साहस, उत्साह बढ़ेगा कि हमारे साथ अन्य लोग भी हैं। इस प्रकार इतने उपवास के बाद भी दृढ़ मनोबल, अपूर्व साहस के साथ आपके अंदर प्रमोद भाव के शब्द निकले। धन्य है आपकी अनुपम धैर्यशीलता।

अनुशासन प्रिय - गुरु यदि पालक होते हैं तो शिष्य बालक होता है और उस शिष्य पर फिर माँ की ममतावत् अपने गुरु की प्रेम-स्नेह की वर्षा होती है। एक बार चातुर्मास के पश्चात् जब पिच्छी परिवर्तन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ पिच्छी परिवर्तन के उपरांत जब सभी संघ अपने-अपने स्थान पर आया, तब किसी महाराज ने क्षु. पूर्ण सागर जी को प्रमोदवश कहा - कि आपको जो पिच्छी मिली है वह तो माताजी की है, उसी समय क्षुल्लक जी पूज्य आचार्य श्री के सम्मुख पहुंचे और कहा (बालकवत्) मुझे यह पिच्छी नहीं चाहिए

यह किसी माता जी की है मुझे दूसरी पिच्छी दीजिए। पूज्य आचार्य श्री ने कहा - जो पिच्छिका एक बार हाथ में आ जाती है उसे ही रखना पड़ता है उसे बदला नहीं जाता। इतना सुनते ही क्षुल्लक जी पहले से ही दुःखी थे अब आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी वे रोने लगे, उसी समय वयोवृद्ध महेन्द्र सागर जी ने उनकी यह अवस्था देखी तो उन्हें अपनी पिच्छी देते हुए कहा - छोटे क्षुल्लक जी रोओ मत तुम हमारी पिच्छी रख लो और अपनी पिच्छी मुझे दे दो। क्षुल्लक जी तुरन्त बच्चे की तरह आंसू पोंछकर खुश हो गये। पूज्य आचार्य श्री इस दृश्य को देखकर मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए क्षुल्लक जी की बालकवत् अबोध अवस्था को देखकर तथा उन्हं बुलाकर अपनी आशीष की छाया में बिठाकर मुस्कुराने लगे। सच शिष्य गुरु के सामने बालकवत ही होता है उसके माता-पिता, भाई-बहिन सब गुरु ही होते अन्य नहीं।

विनय सम्पन्नता से समन्वित गुरुवर - परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज क्षुल्लक पूर्ण सागर को उनके प्रारंभिक साधना काल में पढ़ाते थे। चूंकि प्रारंभिक अवस्था थी दैनिक समस्त क्रियाओं को करना साथ ही विहार भी करना। संपूर्ण क्रियाओं का समय निर्धारित था अतः अध्ययन के

लिए समय कम पड़ता था, कभी-कभी क्षुल्लक जी को याद नहीं हो पाता था तो उन्हें बहुत भय लगता था कहीं आचार्य महाराज की वात्सल्य दृष्टि में अन्तर न आ जाए, कहीं महाराज यह सोचे कि क्षुल्लक जी पढ़ते-लिखते नहीं सोते रहते होंगे। अतः क्षुल्लक जी ने गाथाएं, सूत्र वगैरह एक पेज पर लिखकर रख लिये। जब आचार्य महाराज को पता चला तो वे बोले यह कागज तुम कब तक अपने पास रखोगे। अधिक से अधिक तब तक जब तक याद नहीं हुआ जब याद हो जाएगा तो अलग कर दोगे और यदि मंदिर में भी रख दोगे तो कोई व्यक्ति फालतू कागज समझकर फेंक देगा। श्रुत की बड़ी भारी अविनय, अवज्ञा हो जायेगी। एक गाथा क्या एक अक्षर भी श्रुत है। श्रुत की विनय करने से ही विद्या आती है। जितना समय लिखने में लगता है उतना याद करने में लगाओगे तो दिमाग में लिख जाएगा। कागज का लिखा तो मिट सकता है, खो सकता है कागज फट सकता है परन्तु दिमाग में जो लिख जाता है वह चिरस्थायी हो जाता है तथा साधकों का एक-एक अक्षर महत्वशाली होता है। साधक ही जिनवाणी के संरक्षक होते हैं। अतः श्रुत विनय का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

6. चमत्कार - तप को ही जिन्होंने अपने संयम का श्रृंगार/आभूषण बनाया है ऐसे पूज्य गुरुवर को उनकी तप साधना से अनेक सिद्धियाँ सहज मात्रा में होना कोई असंभव बात नहीं है, चमत्कार होना कोई बड़ी बात नहीं, यह उनके चारित्र की विशेषता थी।

(i) मंत्र चमत्कार - जबलपुर के पास अचरोनी ग्राम है। उस गाँव में कुएँ तो थे पर किसी में भी पानी नहीं था। मंदिर में श्रावकों ने पूज्य आचार्य श्री के समक्ष अपनी समस्या रखी और यह भी कहा कि हम लोग शांति विधान करना चाहते हैं पर कुएँ में पानी नहीं है क्या करें ? हमें ऐसा उपाय बताइये जिससे कुएं में पानी आ जाये। पूज्य आचार्य श्री ने स्वीकारात्मक आशीर्वाद दे दिया और कहा कि सुबह 5 मीटर का सफेद कपड़ा लेकर आना, उन्होंने वैसा ही किया। तीन दिन बाद कुएं में पानी आ जाएगा ऐसा पूज्य आचार्य श्री ने आश्वासन दिया। मंत्र संस्कार कर उस कपड़े को दे दिया और कहा कि णमोकार मंत्र पढ़कर इस कपड़े से कुएँ को ढक दो और तीन दिन तक णमोकार मंत्र का अखण्ड पाठ करो। सबने वैसा ही किया तीन दिन पूरे होने पर जब कपड़ा हटाया तो वह कुआँ स्वच्छ मीठे जल से भरा हुआ प्राप्त हुआ। इस चमत्कार से जैन-जैनेतर सभी की श्रद्धा जैन धर्म और जैन गुरुओं के प्रति बढ़ गई।

(ii) वचनों का चमत्कार - प्रसिद्ध क्षेत्र ऋषभदेव केशरिया जी (राज.) में पूज्य आचार्य श्री संघ सहित पहुचें। पूज्य गुरुदेव को अभिषेक दिखाने के लिए कुछ व्यक्ति मूलनायक चमत्कारी आदिनाथ की वेदी में ले गये वहाँ जल का घड़ा रखा था पर पानी बहुत थोड़ा था जिससे वे चिंतित थे तब पूज्य आचार्य श्री ने कहा - चिंतित क्यों हो ? घड़े से ही अभिषेक करो। लेकिन घड़े से जब अभिषेक प्रारंभ हुआ तो उसमें से पानी निकलता ही गया। उपस्थित अनेक लोगों ने अभिषेक किया पर पानी समाप्त नहीं हुआ। इस चमत्कार को देखकर बड़ा भारी जय-जयकार हुआ। ये सब तप का प्रतिफल, चमत्कार है। क्योंकि तप से स्वयं वचन सिद्धि बल बढ़ता है।

(iii) जब पूज्य आर्यिका श्री विजया मति माताजी विहार कर 13-2-2001 को पृथ्वीपुर गाँव पहुंची तो वहाँ के पुजारी ने बताया कि - एक बार पूज्य आचार्य श्री बंधाक्षेत्र करके पृथ्वीपुर पधारे। उस समय हमारे मंदिर के ठीक पीछे बांस का बीड़ा उगा था जिससे मंदिर को पूर्ण खतरा था। कई बार उसे खुदाया पर वह ज्यों का त्यों हो जाता। सारी समाज इस बात से व्याकुल थी। सभी ने पूज्य आचार्य श्री के समक्ष इस विषय की चर्चा कर निवारण हेतु प्रार्थना की। पूज्य

गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए सांत्वना दी और 2 उपवास किये। तीसरे दिन आकर उस वृक्ष समूह को अपने वरद हस्त से आशीर्वाद देकर जिनालय में आकर शुद्धि करके पारणा को निकले। आहार होने के बाद आपने कहा- भाई देखो तो उस बांस के बीड़ा का क्या हाल है ? कुछ लोग गये और उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वहाँ बाँस का (झुण्ड) बीड़ा तो क्या अंकुर मात्र भी न था, न गर्त था, न खुदाई का कोई चिह्न, वह किस प्रकार अदृश्य हुआ कुछ पता नहीं। मंदिर सुरक्षित हुआ, आज भी उपस्थित है। आज भी पूज्य आचार्य श्री की साधना के चमत्कार की गाथा सभी बाल-गोपाल गाते हैं।

(iv) तपस्या का चमत्कार - जब पूज्य आचार्य श्री खंडवा से बावनगजा के लिए विहार कर रहे थे तब योगीन्द्र सागर मुनि साथ में थे। रास्ते के एक भयानक जंगल में 1-1-1981 दिन रविवार को प्रातः काल नरसिंह से जंगल के राजा शेर की भेंट हुई, परंतु आपकी तपस्या के प्रभाव से वह नतमस्तक होंकर चला गया।

(v) आशीर्वाद का चमत्कार - एक बार जब आप श्री सम्मेद-शिखर जी के पर्वत पर वंदना के लिए गये तब चंद्रप्रभु भगवान की टोंक के पास सिंहराज से भेंट हुई। वह आचार्य श्री के पास सामने खड़ा हो गया और आँखें फाड़ कर देखने लगा, आपने जब उसे

आशीर्वाद दिया तब प्रसन्नचित्त होकर नमन कर छलांगे लगाता हुआ निकल गया। मानों गुरुदेव के दर्शनार्थ ही आया हो।

(vi) पूज्य आचार्य श्री 11 बजे रात को खड़े होकर ध्यान कर रहे थे। उस समय संघस्था मैनाबाई तथा अन्य दो महिलायें जो बाजार से लौट कर आई थीं, उन्होने दूर से ही देखा कि आचार्य श्री के कमरे में कोई महिला आचार्य श्री की आरती कर रही है। उन्होंने कुछ लोगों से कहा जाओ देखो कौन आचार्य श्री के कमरे में इतनी रात को चला गया है सुबह होगी तो आचार्य श्री हम लोगों पर गुस्सा करेंगे कि तुम लोग ध्यान नहीं रखते हो आदि-आदि। कुछ लोग वहाँ गये और उन्होंने देखा और पूछा कि यह कौन है ? पर लोगों के आने की आवाज सुनकर हाथ में दीप लिये हुये वह देखते-देखते ही विलीन हो गईं। तब सतत् वहाँ वैय्यावृत्ति आदि करने वाले लोगों से ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री के दर्शन हेतु पद्मावती देवी आती है तथा आरती कर चली जाती है।

(vii) सन् 1983 में आचार्य श्री जब दाहोद में विराजमान थे तब सात उपवास पूर्वक श्रीमति बाई के घर निरन्तराय आहार सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री मंदिर में आ गये। इधर श्रीमति बाई चौके में भूमि को जब पौंछने लगी तब उनकी दृष्टि भूमि में अंकित केसर के चरण

चिह्नों पर पड़ी। जहाँ खड़े होकर आचार्य श्री आहार ले रहे थे। वहाँ स्वतः केसर के चरण चिह्न बन गये थे। सर्वत्र यह चर्चा फैल गई, दर्शनार्थियों की भीड़ लग गई लोगों ने रगड़-रगड़ कर धोया पर केशर ज्यों की त्यों चरण चिह्नों के आकार में वही बनी रही, उसमें और अधिक चमक आने लगी।

(viii) खमेरा चातुर्मास में एक दिन पूज्य आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज का एक श्रावक के घर आहार हुआ। पूज्य आचार्य श्री आहार के बाद अपनी वसतिका में आ गए लेकिन पूज्य आचार्य श्री की आत्म विशुद्धि का प्रभाव कि पाटे पर आचार्य श्री के चरण अंकित हो गए। जब श्रावकों ने पाटे को पोंछा तो उन्हे वह चिह्न दिखाई दिए धन्य है ऐसे महामना संत को।

(ix) पूज्य आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज का विहार चल रहा था रास्ते में एक गांव में रात्रि विश्राम किया और सुबह विहार कर मीरज गांव में पहुंचने वाले थे संघपति ने कहा कि गांव के आगे बाहर जाकर आहार करेंगे क्योंकि उस गांव के कुएं का पानी खराब था। पूज्य आचार्य श्री ने गांव के मंदिर ही जाने का बोला। पूज्य आचार्य श्री की तपस्या का प्रभाव वहाँ रात्रि में केशर की वर्षा हुई और कुयें का खराब पानी भी पूर्णतः ठीक होकर मीठा हो गया।

इस चमत्कार से आस-पास के गाँव वाले भी अपने-अपने कुएँ का पानी लेकर आये कि हमारे कुएं का पानी भी मीठा कर दीजिए।

(x) पूज्य आचार्य श्री का विहार इन्दौर के लिए हो रहा था जब संघ आहू पार्श्वनाथ क्षेत्र पर पहुँचा रात्रि मुकाम हुआ और प्रातः विहार होना था लेकिन पूज्य गुरुदेव ने कहा कि नहीं हम यहाँ तीन दिन रुकेगें। लेकिन संघपति का आग्रह था कि नहीं महाराज विहार करना है क्योंकि गाँव के कुओं में पानी नहीं था, गांव से 2 कि.मी. दूर कुएं से पानी लाना संभव नहीं था। पूज्य आचार्य श्री की साधना का चमत्कार कि रत्रि में इतनी अधिक बारिश हुई कि गाँव के सारे कुओं में पानी भर गया प्रातः होने पर आचार्य श्री ने कहा - क्यों संघपति जी विहार करना है ? तब संघपति ने कहा - नहीं गुरुदेव अब आप तीन दिन नहीं एक सप्ताह भर रुकिए।

(xi) खमेरा चातुर्मास के अवसर पर खमेरा के नवीन जिनालय हेतु भगवान नमिनाथ की प्रतिमा लाई गई पूज्य आचार्य श्री जिस कमरे में विराजमान थे उसी कमरे में उस प्रतिमा को भी, आचार्य श्री के पाटे के पास ही विराजमान किया गया । जब प्रतिमा लाई गई तो अथक प्रयास के उपरांत वह प्रतिमा कमरे में विराजित हो पाई। अब उस प्रतिमा पर आचार्य श्री के श्रीमुख से शांति मंत्र द्वारा घी से अभिषेक

होने लगा। उस घी के गंधोदक से कई रोगियों की रोग पीड़ा का शमन होने लगा। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय उस मूर्ति को मंदिर में विराजमान करने हेतु श्रावकगण लेने आए परंतु सभी इस सोच में थे कि मूर्ति तो घी के अभिषेक के कारण बहुत ही चिकनी हो गई है इसे प्रतिष्ठा स्थल तक व्यवस्थित कैसे ले जाया जाए और प्रयास करने पर भी वह उठ नहीं रही थी। तभी आचार्य श्री के सामायिक का समय हो रहा था आचार्य श्री वहीं ध्यान में खड़े हुए और प्रतिमा को ले जाने का संकेत दिया और सामायिक करने लगे। गुरु आज्ञा एवं आशीर्वाद पा श्रावकों ने प्रतिमा को आसानी से उठाकर प्रतिष्ठा स्थल पर विराजमान कर दिया। मानों प्रतिमा का वजन फूल जैसा हो गया हो। यह था पूज्य आचार्य श्री की तपस्या का प्रभाव।

(xii) खमेरा चातुर्मास में एक दिन एक श्रावक की पैसे की पोटली गुम गई वह व्यक्ति बहुत परेशान था उसने पूज्य आचार्य श्री के पास आकर अपनी बात रखी। पूज्य आचार्य श्री की कृपा दृष्टि कि उसे आशीर्वाद दिया और दूसरे ही दिन उसकी पोटली मिल गई। धन्य है ऐसे दयालु गुरुवर को।

(xiii) एक बार पूज्य आचार्य श्री के पास अहमदाबाद के दो व्यक्ति दर्शनार्थ आए और कुछ दिनों के बाद उन्होंने कहा - गुरुदेव

कल सुबह चार बजे हमें जाना है। आचार्य श्री ने कहा- ठीक है चले जाना और प्रातः जब वे 4 बजे आशीर्वाद लेने के लिए गये तो पूज्य आचार्य श्री ने उन्हें देखा ही नहीं। उन्होंने कहा भी- कि महाराज जी 4 बजे हमारी बस है हमें जाना है लेकिन पूज्य आचार्य श्री ने ध्यान नहीं दिया और वह दोनों मैनाबाई के पास आए कि हमें जाना है लेकिन आचार्य श्री ने आशीर्वाद नहीं दिया है। मैनाबाई ने कहा - अगर आपकी टिकिट हो तो आप चले जाओ। उन्होंने कहा - आचार्य श्री ने आशीर्वाद नहीं दिया है इसलिए हम नहीं जायेंगे। मैनाबाई ने कहा - ठीक है जैसी आपकी इच्छा। प्रातः होने पर उन्हों ने स्नान आदि करके भगवान का अभिषेक पूजन किया। जब वे अभिषेक पूजन करेक निवृत्त हुए तो एक व्यक्ति ने आकर मैनाबाई जी से पूछा कि आपके जो अहमदाबाद वाले लोग आये थे वो चले गये क्या ? मैनाबाई ने कहा - नहीं। तो उसने कहा ठीक रहा वो नहीं गए क्योंकि जिस बस से उन्हें जाना था उसका एक्सीडेन्ट हो गया और इतना हुआ कि बस चकनाचूर हो गई। जब उन व्यक्तियों को पता चला तो उन्होंने कहा कि गुरुवर की मौन मुद्रा तथा आशीर्वाद ने ही आज हमें बचा लिया। धन्य है ऐसे कृपा निधान गुरुवर को।

(xiv) एक बार पूज्य आचार्य श्री विहार करते हुए एक छोटे से

गाँव में पहुँचे, वहाँ रास्ते में एक ऐसा व्यक्ति दिखा जिसके सारे सरीर में घाव थे तथा खून और पीप निकल रहा था पूज्य आचार्य श्री ने उसे देखा और देखकर आगे निकल गए। उस व्यक्ति ने भी पूज्य गुरुदेव को देखा और तभी से बाबा-बाबा चिल्लाने लगा चूंकि वह शरीर से लाचार था लेकिन वह बाबा-बाबा चिल्लाते हुए पूज्य आचार्य श्री के पीछे लग गया। पूज्य आचार्य श्री तो सामायिक का समय होने से आगे जाकर वृक्ष के नीचे सामायिक करने बैठ गए। इतने में वह व्यक्ति भी बाबा-बाबा चिल्लाता हुआ वहाँ आ गया और उसके पीछे एक दूसरा व्यक्ति भी आ गया। उसे देखकर सभी व्यक्ति घबरा गये कि कहीं यह भूत-प्रेत तो नहीं आ गया और वह व्यक्ति महाराज के सामने वृक्ष के नीचे गिर पड़ा और बाबा-बाबा चिल्लाता रहा। जो पीछे से आदमी आया था उसने कहा - महाराज यह लगभग 12 महीने से ऐसा ही है। तभी आचार्य श्री का ध्यान विसर्जन हुआ और आचार्य श्री ने उसे घूर कर के देखा फिर पास के ही वृक्ष के पास एक बांबी थी उसे देखा और उससे कहा कि इस बांबी में हाथ डालो। उस व्यक्ति ने आचार्य श्री की बात मान ली। और उस बांबी में हाथ डाल दिया। बांबी में सर्प मुख फाड़े बैठा ही था। जैसे ही हाथ डाला सर्प ने उसे डस लिया हाथ को बाहर निकाला तो खून निकल रहा था

और वह खून-खून बोलने लगा तभी आचार्य श्री ने कहा कि दूसरा हाथ भी बांबी में डालो और उसने दूसरा हाथ भी बांबी में डाल दिया सर्प ने दूसरा हाथ भी डस लिया और उससे भी खून निकलने लगा। संघ के सभी साधु घबरा गये कि सर्प ने दोनों हाथों को डस लिया है अब इसका क्या होगा ? निश्चित मर जायेगा। पूज्य आचार्य श्री ने उससे कहा-कि अब तुम घर जाओ। वह बाबा-बाबा बोलता हुआ घर चला गया। उसके साथ वाला व्यक्ति भी उसके साथ चला गया। दस दिन बाद वह व्यक्ति बाबा-बाबा चिल्लाता हुआ आया और साथ में दूसरा व्यक्ति भी आया। पूज्य आचार्य श्री ने देखकर पूछा-क्या बात है। उसने कहा-महाराज जितने घाव है सब पर खुजली आ रही है। आचार्य श्री ने कहा- घबराओ नहीं सर्प ने काट कर सारा जहर खींच लिया है।

एक माह बाद जब वह व्यक्ति पुनः वापिस आया तो देखा उसका शरीर सामान्य हो गया लेकिन शरीर पर मात्र काले-काले दाग थे। धन्य है ऐसे गुरुवर की वात्सल्यमयी साधना के चमत्कार को।

(xv) पूज्य आचार्य श्री एक बार एक स्थान पर गर्मी के समय में धूप में ध्यान कर रहे थे एक तो गर्मी और दूसरा धूप जिसके कारण

पूज्य आचार्य श्री के शरीर से पसीना बह गया और इतना बहा कि सबको दिखाई दे रहा था। सभी परेशान थे क्या करें ? कुछ भी नहीं कर सकते क्योंकि पूज्य आचार्य श्री 12 बजे से 3 बजे तक सामायिक करते रहे। सामायिक के पश्चात् पूज्य आचार्य श्री 3 बजे कमरे में चले गये, लेकिन पूज्य आचार्य श्री दूसरे दिन भी धूप में सामायिक करने बैठे। किंतु तपस्या का प्रभाव कि दूसरे दिन सामायिक के समय में केसर की वृष्टि हो गई।

(xvi) एक बार पूज्य आचार्य श्री विहार करके जा रहे थे संध्या का समय था एवं सामायिक का समय हो रहा था। साथ में जो आगे के गाँव का व्यक्ति था वह आगे अपने गांव में संघ का सम्मान करने के लिए चला गया था। लेकिन थोड़ी दूर जाने पर देखा कि दो रास्ते हैं अब क्या करें ? साथ में कोई रास्ता बताने वाला नहीं था कि किस रास्ते पर जाना है ? तो आचार्य श्री रास्ते पर ही हाथ पीछे करके खड़े हो गए क्योंकि साथ में माताजी, बहिनें थीं। अगर रास्ता भटक गए और जंगल में पहुँचे तो क्या होगा ? तभी एक महिला आई जो सुसज्जित थी वह आकर बोली - महाराज इधर चले जाओ। और आचार्य श्री उस रास्ते पर चल दिए। थोड़ी दूर जाने पर आचार्य श्री ने कहा - अरे अपन सभी तो आ गये लेकिन उस महिला को साथ में

नहीं लाये वह अकेली रह गई है। कहाँ जायेगी उसे भी ले आओ। कुछ लोगों ने जाकर उसे चारों तरफ ढूंढा लेकिन वह नहीं मिली। जब आचार्य श्री को पता चला कि वह नहीं मिली तो आचार्य श्री ने कहा - मुख बंद करो और सभी चले आओ। धन्य है पूज्य आचार्य श्री की कठोर साधना के प्रभाव को कि उनके चरणों में रास्ता बताने के लिए देवी आई।

पूज्य आचार्य श्री की तपस्या, साधना के और भी हजारों चमत्कार हैं जिन्हें हमने व अनेक भक्तों ने प्रत्यक्ष देखा है और जिन्हें सुनकर ही अनेक लोगों की श्रद्धा के दीप जल उठते हैं।

7. **चातुर्मास** - आपने तप, त्याग एवं साधना कर चातुर्मास करके धर्म की महती प्रभावना की है आपने क्षुल्लक अवस्था में दो, मुनि अवस्था में 9, एवं आचार्य अवस्था में (1972 से 2007 तक) 36 चातुर्मास हो चुके हैं।

क्षुल्लक अवस्था के चातुर्मास -

वि. सं.	सन्	स्थान
2018	1961	मेरठ
2019	1962	ईसरी बाजार

मुनि अवस्था के चातुर्मास -

वि. सं.	सन्	स्थान
2020	1963	बाराबंकी
2021	1964	बावनगजा
2022	1965	मांगीतुंगी
2023	1966	श्रवणबेलगोला
2024	1967	हुम्बुज
2025	1968	कुन्थलगिरि
2026	1969	गजपन्था
2027	1970	मांगीतुंगी
2028	1971	गिरनार जी

आचार्य पद अवस्था के चातुर्मास -

2029	1972	मथुरा जी
2030	1973	सम्मेदशिखरजी
2031	1974	रांची (बिहार)
2032-33	1975-76	कलकत्ता (बंगाल)

वि. सं.	सन्	स्थान
2034	1977	इटावा
2035	1978	भिण्ड
2036	1979	जबलपुर
2037	1980	दुर्ग
2038	1981	नागपुर
2039	1982	दाहोद
2040	1983	डूंगरपुर
2041	1984	लुहारिया
2042	1985	पारसोला
2043	1986	प्रतापगढ़
2044	1987	उदयपुर
2045	1988	बांसवाड़ा
2046	1989	सागवाड़ा
2047	1990	इन्दौर
2048	1991	रामगंजमंडी
2049	1992	किशनगढ़ मदनगंज

वि. सं.	सन्	स्थान
2050	1993	आनन्दपुरकालू
2051	1994	जयपुर
2052	1995	दिल्ली
2053	1996	फिरोजाबाद
2054	1997	टीकमगढ़
2055	1998	चम्पापुर
2056	1999	बनारस
2057	2000	छतरपुर
2058	2001	बड़वानी
2059	2002	नरवाली
2060	2003	उदयपुर
2061	2004	खमेरा
2062	2005	बम्बई
2063	2006	लासूर्णे
2064	2007	कुंजवन-उदगांव

8. आचार्य श्री से दीक्षित त्यागी वृंद - पूज्य तपस्वी सम्राट 108 आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज ने अपने आत्म हित के साथसाथ अनेक लोगों को त्याग और मोक्ष के पथ पर चला रहे है। लगभग आपने अपने कर कमलों के द्वारा दीक्षित 72 मुनि, 30 आर्यिका, 3 ऐलक, 8 क्षुल्लक एवं 13 क्षुल्लिकाएँ ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी साधना रत है साथ ही आपने कितने श्रावक व श्राविकाओं को प्रतिमा, व्रत वगैरह देकर उनका उपकार कर रहे है एवं आप अभी तक लगभग 40-45 सल्लेखनाएँ करा चुके हैं।

मुनि महाराज -

1. मुनि श्री 108 शीतल सागर जी (आचार्य, समाधिस्थ), 2. मुनि श्री 108 आगम सागर जी (समाधिस्थ), 3. मुनि श्री 108 उदय सागर जी (समाधिस्थ), 4. मुनि श्री 108 हेम सागर जी (आचार्य), 5. मुनि श्री 108 महेन्द्र सागर जी (समाधिस्थ) 6. मुनि श्री 108 सुधर्म सागर जी (आचार्य), 7. मुनि श्री 108 मेघ सागर जी (समाधिस्थ), 8. मुनि श्री 108 चरण सागर जी (समाधिस्थ) 9. मुनि श्री 108 गुण सागर जी (समाधिस्थ), 10. मुनि श्री 108 तप सागर जी (समाधिस्थ), 11. मुनि श्री 108 सर्वज्ञ सागर जी , 12. मुनि श्री 108 पार्श्व सागर जी, 13. मुनि श्री 108 पद्म सागर

जी (समाधिस्थ), 14. मुनि श्री 108 ऋषभ सागर जी, 15. मुनि श्री 108 अजित सागर जी (समाधिस्थ), 16. मुनि श्री 108 रयण सागर जी (आचार्य), 17. मुनि श्री 108 गौतम सागर जी (समाधि-स्थ), 18. मुनि श्री 108 सुबोध सागर जी (समाधिस्थ), 19. मुनि श्री 108 सुमन सागर जी (समाधिस्थ), 20. मुनि श्री 108 गजेन्द्र सागर जी (समाधिस्थ), 21. मुनि श्री 108 ज्ञान सागर जी (समाधिस्थ), 22. मुनि श्री 108 सर्वज्ञ सागर जी (समाधिस्थ), 23. मुनि श्री 108 सिद्धान्त सागर जी (आचार्य), 24. मुनि श्री 108 सुविधि सागर जी (आचार्य), 25. मुनि श्री 108 जय सागर जी (आचार्य), 26. मुनि श्री 108 चन्द्र सागर जी (आचार्य), 27. मुनि श्री 108 शील सागर जी (समाधिस्थ), 28. मुनि श्री 108 आनन्द सागर जी (समाधिस्थ), 29. मुनि श्री 108 श्रुत सागर जी, 30. मुनि श्री 108 सिद्ध सागर जी (समाधिस्थ), 31. मुनि श्री 108 शिव सागर जी (समाधिस्थ), 32. मुनि श्री 108 शुभ सागर जी, 33. मुनि श्री 108 संवेग सागर जी (समाधिस्थ), 34. मुनि श्री 108 शान्ति सागर जी, 35. मुनि श्री 108 सारस्वत सागर जी, 36. मुनि श्री 108 सूर्य सागर जी (आचार्य), 37. मुनि श्री 108 योगीन्द्र सागर जी (आचार्य), 38. मुनि श्री 108 सुमति सागर जी

(समाधिस्थ), 39. मुनि श्री 108 श्रमण सागर जी (समाधिस्थ), 40. मुनि श्री 108 समर्पण सागर जी (समाधिस्थ), 41. मुनि श्री 108 समन्वय सागर जी, 42. मुनि श्री 108 समय सागर जी, 43. मुनि श्री 108 सुधा सागर जी (समाधिस्थ), 44. मुनि श्री 108 सुदर्शन सागर जी, 45. मुनि श्री 108 सुज्ञान सागर जी, 46. मुनि श्री 108 सुचारित्र सागर जी, 47. मुनि श्री 108 सुतप सागर जी, 48. मुनि श्री 108 श्रेष्ठ सागर जी, 49. मुनि श्री 108 सुंदर सागर जी (आचार्य), 50. मुनि श्री 108 सौभाग्य सागर जी, 51. मुनि श्री 108 सुनील सागर जी (आचार्य), 52. मुनि श्री 108 सुभद्र सागर जी, 53. मुनि श्री 108 सुरकीर्ति सागर जी, 54. मुनि श्री 108 सुरदेव सागर जी, 55. मुनि श्री 108 सकल कीर्ति सागर जी, 56. मुनि श्री 108 सुपार्श्व कीर्ति सागर जी (समाधिस्थ), 57. मुनि श्री 108 सुकौशल सागर जी, 58. मुनि श्री 108 सुकुमाल सागर जी, 59. मुनि श्री 108 सुख सागर जी, 60. मुनि श्री 108 सुप्रसन्न सागर जी (समाधिस्थ), 61. मुनि श्री 108 सुप्रमाण सागर जी, 62. मुनि श्री 108 सुवीर सागर जी, 63. मुनि श्री 108 श्रेयांस सागर जी (समाधिस्थ) 64. मुनि श्री 108 सूरसेन सागर जी (समाधिस्थ), 65. मुनि श्री 108 सुरम्य सागर जी (समाधिस्थ)

66. मुनि श्री 108 सुशांत सागर जी, 67. मुनि श्री 108 समग्र सागर जी, 68. मुनि श्री 108 शुभम् सागर जी, 69. मुनि श्री 108 समाधि सागर जी (समाधिस्थ), 70. मुनि श्री 108 सन्मान सागर जी, 71. मुनि श्री 108 सुपार्श्व सागर जी, 72. मुनि श्री 108 सुमर सागर जी

परम पूज्य आचार्य श्री सन्मति सागर जी द्वारा प्रदत्त उपाध्याय एवं गणिनी पद -

1. उपाध्याय श्री 108 सौभाग्य सागर जी, 2. उपाध्याय श्री 108 शशांक सागर जी

1. गणिनि आर्यिका विमल प्रभा जी, 2. गणिनि आर्यिका सिद्धांत मति जी, 3. गणिनि आर्यिका समता मति जी, 4. गणिनि आर्यिका संगम मति जी, 5. गणिनि आर्यिका सौभाग्य मति जी

आर्यिका माताएं -

1. आर्यिका श्री सुपार्श्व मति जी (समाधिस्थ), 2. आर्यिका श्री नेमिमति जी (समाधिस्थ), 3.आर्यिका श्री यशो मति जी (समाधिस्थ), 4. आर्यिका श्री वीर मति जी (समाधिस्थ), 5. आर्यिका श्री शांति मति जी (समाधिस्थ), 6. आर्यिका श्री अजित मति जी (समाधिस्थ), 7. आर्यिका श्री देव मति जी (समाधिस्थ),

8. आर्यिका श्री चारित्र मति जी (समाधिस्थ), 9. आर्यिका श्री अनंत मति जी (समाधिस्थ), 10. आर्यिका श्री दर्शन मति जी, 11. आर्यिका श्री सरल मति जी (समाधिस्थ), 12. आर्यिका श्री ज्ञान मति जी (समाधिस्थ), 13. आर्यिका श्री जय मति जी (समाधिस्थ), 14. आर्यिका श्री चन्द्र मति जी (समाधिस्थ), 15. आर्यिका श्री श्रुत मति जी (समाधिस्थ), 16. आर्यिका श्री सुबुद्धि मति जी, 17. आर्यिका श्री सूर्य मति जी (समाधिस्थ), 18. आर्यिका श्री सुबोध मति जी (समाधिस्थ), 19. आर्यिका श्री सुमति मति जी (समाधिस्थ), 20. आर्यिका श्री शरण मति जी, 21. आर्यिका श्री शीतल मति जी, 22. आर्यिका श्री संभव मति जी (समाधिस्थ), 23. आर्यिका श्री सुदत्त मति जी (समाधिस्थ), 24. आर्यिका श्री सुविश्वास मति जी, 25. आर्यिका श्री श्रेयांस मति जी (समाधिस्थ), 26. आर्यिका श्री साधना मति जी (समाधिस्थ), 27. आर्यिका श्री अक्षय मति जी (समाधिस्थ), 28. आर्यिका श्री श्रीमति जी (समाधिस्थ), 29. आर्यिका श्री संभव मति जी, 30. आर्यिका श्री सहस्त्र मति जी (समाधिस्थ)

ऐलक जी -

1. ऐलक श्री सुबोध सागर जी (समाधिस्थ), 2. ऐलक श्री सुदक्ष सागर जी, 3. ऐलक श्री सुलक्ष्य सागर जी

क्षुल्लक जी -

1. क्षुल्लक श्री पूर्ण सागर जी, 2. क्षुल्लक श्री साधना सागर जी (समाधिस्थ), 3. क्षुल्लक श्री समिति सागर जी, 4. क्षुल्लक श्री संत सागर जी, 5. क्षुल्लक श्री सुरत्न सागर जी, 6. क्षुल्लक श्री सन्मार्ग सागर जी, 7. क्षुल्लक श्री सत् सागर जी, 8. क्षुल्लक श्री सुरेन्द्र सागर जी

क्षुल्लिका माता जी-

1. क्षुल्लिका श्री शुभमति जी, 2. क्षुल्लिका श्री स्वस्ति मति जी, 3. क्षुल्लिका श्री सम्यक्त्व मति जी, 4. क्षुल्लिका श्री संदेश मति जी, 5. क्षुल्लिका श्री संयम मति जी, 6. क्षुल्लिका श्री सुव्रत मति जी, 7. क्षुल्लिका श्री सुवीर मति जी, 8. क्षुल्लिका श्री शांति मति जी, 9. क्षुल्लिका श्री सुधर्म मति जी, 10. क्षुल्लिका श्री सुहर्ष मति जी, 11. क्षुल्लिका श्री चन्द्र मति जी, 12. क्षुल्लिका श्री विसाता मति जी।

9. रचनात्मक कार्य -

1. पंचकल्याणक - 1. खेरवाड़ा, 2. उदयपुर, 3. पारसोला, 4. दाहोद, 5. बेड़िया, 6. पार्श्वगिरि (बड़वानी) 7. खमेरा, 8. लासुर्णे, 9. बम्बई, 10. दिल्ली (लघु पं.)

2. शिलान्यास - 1. टीकमगढ़, 2. औरंगाबाद, 3. रांची

3. मन्दिर का निर्माण - 1. दिल्ली, 2. ढोढर, 3. बड़वानी (सात मन्दिर सप्तऋषी, चौबीस कामदेव, पंच परमेष्ठी, चौबीसी, नवदेवता, पार्श्वनाथ, ऋषिमण्डल) 4. नरवाली (नन्दीश्वर रचना), 5. बम्बई (नन्दीश्वर रचना)

4. वेदी प्रतिष्ठा - 1. गुवाड़ी, कुलथाना

5. मूर्ति स्थापना - 1. खमेरा, 2. टीकमगढ़, 3. बड़वानी, 4. नरवाली, 5. बम्बई, 6. कुंजवन (उदगांव)

6. मुनिकुंजर आचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) मूर्ति स्थापना एवं चरण पादुका -

जयपुर (नसियां में), जयपुर (जौहरी बाजार) अरनोद, शिकोहाबाद, देवधर, मधुवन, बड़ामलहरा, पहाड़ी धीरज, एत्मादपुर, कटरा पठान, फिरोजाबाद, ऋषभदेव, सागवाड़ा, बलुंदा (अजमेर), मिरज, फिरोजाबाद, उदयपुर, इटावा, लालपुरा (इटावा), फफोतू, भिण्ड, सरावज्ञान (एटा), लोहियान (फिरोजाबाद), प्रतापगढ़, फिरोजाबाद, निमाज, डूंगरपुर, भड़भूजा घाटी, साबला, पारसोला, मुंगाणा, गनौड़ा, लुहारिया, बाँसवारा, इंदौर, उज्जैन, रामगंजमंडी, पटना, आरा, मधुवन (बीस पंथी कोठी), उदगांव, भेलुपूर, उज्जैन (इन्द्रानगर), सोनागिर, खमेरा, खनियाधाना, सुहागपुरा, महसाना,

सिरोज, बावनगजा, भेलुपूर. नरवाली, रींछा, कुलथाना, खोमिया, औरंगाबाद, मुंबई, मुंबई, कुंजवन (उदगांव)

10. परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज की विशेषताएँ -

1. आपने दीक्षा लेते ही घी, शक्कर, नमक का आजीवन त्याग किया था।

2. आपने मथुरा चातुर्मास में पानी का भी त्याग किया था।

3. आपने शिखर जी के पहाड़ की लगातार 108 वंदना के समय एक दिन मूंग की दाल का पानी तथा एक दिन उपवास किया था।

4. आपका कई वर्षों से आजीवन अन्न का त्याग है।

5. आपने कुछ समय बाद दूध का त्याग कर दिया था।

6. आपने कुछ समय तक मात्र आहार में सिंघाड़ा एवं राजगिर लिया था।

7. आपने कुछ समय बाद कुट्टू का भी त्याग कर दिया था।

8. आपका गन्ना, केले के अलावा सभी हरी का त्याग था।

9. कुछ समय बाद गन्ने के रस का भी त्याग कर दिया था।

10. आप समय के पाबंद हैं।

11. आपको कोई लेने आये या नहीं किन्तु समय होने पर

प्रवचन सभा में आप स्वयं चले जाते हैं।

12. आपकी सभा में भले ही एक व्यक्ति क्यों न हो, आप प्रवचन प्रारंभ कर देते हैं।

13. आपका कितना भी बड़ा कार्यक्रम क्यों न हो आप आवश्यक कर्त्तव्यों का समय होने पर स्टेज से उठ जाते हैं।

14. आप कभी भी किसी कार्यक्रम में जाते तो बैंड-बाजे का इंतजार नहीं करते हैं।

15. आप कभी भी चटाई उपयोग में नहीं लेते हैं।

16. विशेष परिस्थितियों के अलावा आप सिर्फ ठंडी में ही घास का उपयोग करते हैं।

17. आप एक ही छोटा पाटा लेते हैं।

18. आप रात्रि में 12 बजे उठकर सामायिक, ध्यान आदि करते हैं।

19. आप अपनी वसतिका में सिंहासन पर नहीं बैठते हैं।

20. आप कभी थूकते नहीं हैं।

21. आप भीड़ की अपेक्षा नहीं रखते हैं।

22. आपकी दृष्टि में गरीब व अमीर सभी समान हैं।

23. आप दीक्षा और शिक्षा देने में कुशल हैं।

24. आप समाधि कराने में वीर हैं।

25. आप विरोधी लोगों की निंदा/तिरस्कार से निडर हैं।

26. आप अपने लक्ष्य में अडिग रहते हैं।

27. आप करुणा मूर्ति हैं तथा बीमार एवं अस्वस्थ्य शिष्यों का स्वयं अपने समक्ष उपचार कराते हैं।

28. आप नेपकीन आदि नहीं रखते हैं।

29. आप सर्दी होने पर कागज का इस्तेमाल करते हैं।

30. आप घी, तेल नहीं लगवाते हैं।

31. आप सामान्यतः औषधियाँ नहीं लेते हैं।

32. आप स्पष्ट वक्ता है।

33. आप दोनों टाईम जिनदर्शन एवं स्तुति करते हैं।

34. आप प्रमुख ग्रन्थों की संस्कृत टीका स्वयं लगाकर पढ़ाते हैं।

35. आप आहार में मात्र छाछ और पानी लेने पर भी वास्तव्य में एकान्तर करते हैं।

36. आप वर्षों से तीन अष्टान्हिका के आठ-आठ निर्जला उपवास करते हैं।

37. आप भाद्र माह के पर्युषण पर्व में 10 निर्जला उपवास करते हैं।

38. आप हिलते हुए पाटे व पत्थर पर पैर नहीं रखते।

39. आप आहार के समय सभी साधुओं की थाली लगने के बाद ही मुद्रा खोलते हैं।

40. आप अपरिचित व्यक्ति से आहार नहीं लेते हैं।

41. आप अपने शिष्य एवं प्रतिशिष्यों के प्रति साधर्मी वात्सल्य भाव रखते हैं।

42. आप सभी साधुओं को रत्नत्रय की रक्षा एवं प्राप्ति के लिए स्वयं प्रेरित करते हैं तथा पूरा सहयोग करते हैं।

11. उपदेश -

1. परम पूज्य आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज का प्रत्येक उपदेश भव्यों को समता देवी का दर्शन कराता है आप कहते हैं समग्र साधना का सोपान समता है।

2. मुक्ति के प्रति अभिलाषी सभी पुरुषों को व्रतों का परिपालन निष्प्रमाद होकर करना चाहिए। व्रत परिपालन से राग-द्वेषादि विकारों का उच्चाटन होता है। विभाव भावों के अभाव के कारण प्राप्त होने वाली समता ही मोक्ष प्राप्ति का मूल कारण होती है।

3. यह मनुष्य जीवन, मोक्ष की प्राप्ति में साधक तत्व है। मनुष्य चाहे तो आत्मानुभूति के द्वार को उद्घाटित करके शुक्ल ध्यान

के द्वारा शिवपुर को प्राप्त कर सकता है। आत्मानुभूति में ममता बाधक है। यदि मुमुक्षु द्वादश अनुर्पेक्षाओं का चिंतवन, स्वाध्याय, व्रत परिपालन, सत्संगति आदि कार्य करेगा तो शनैःशनैः द्रव्याशक्ति नष्ट हो जायेगी, और ममता का विनाश होते ही समता का प्रकाश फैल जाएगा। जिससे शुद्धोपयोग की दशा प्राप्त होने में पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

4. विषमभाव समस्त दोषों व दुःखों की भूमि है। विषम भाव के कारण कामना, वासना, ममता, पराधीनता, आकुलता-व्याकुलता, संकीर्णता बढ़ती जाती है। इन दोषों के कारण धरती नरक का रूप धारण कर लेती है। धरती को स्वर्ग बनाने के लिए संसार के प्रत्येक क्षेत्र में समता का प्रवेश करना अत्यन्त अनिवार्य है।

5. संसार में जो विभिन्न क्षेत्र है चाहे वह व्यक्तिगत जीवन क्षेत्र हो, चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शारीरिक, पारिवारिक, दार्शनिक या अन्य कोई क्षेत्र हो। उन क्षेत्रों में यदि समता नहीं तो वे क्षेत्र मानव जाति के लिए हितकारी नहीं है।

6. जहाँ पर अधिकारों का शोषण होता है, जहाँ आसुरी भावनाओं को स्थान मिलता हो, जहाँ विवशता को खाद-पानी मिलता हो उससे मानव जाति को दुख ही मिलता है कभी आनंद उपलब्ध नहीं हो सकता।

7. समता के अभाव में आध्यात्मिक आनंद की बात तो दूर ही रही, भौतिक एवं व्यवहारिक क्षेत्रों में भी सफलता एवं सुख समृद्धि असम्भव है। विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान समता है।

8. मुक्ति का एक मात्र उपाय समता है। समता के अभाव में किया गया तप और जप, बंजर भूमि में बीज बोने के तुल्य है। अंक के बिना शून्य की कोई कीमत नहीं होती, उसी प्रकार समता के बिना व्रतों का कोई मूल्य नहीं होता। समता समस्त साधनाओं का आधार है। समता संसार समुद्र से पार कराने वाली नौका है। समता ज्ञान का फल है। समता चारित्र का मुकुट है। समता अव्याबाध सुख का एक मात्र आलय है। समता मोक्षमार्ग की दीपिका है।

9. समता रूपी सुधा का निरंतर पान करने वाला जीव कषाओं के तीव्र हलाहल को निष्प्रभ बना डालता है उसका जीवन गंगा जल की भांति, निर्मल बन जाता है। कर्म बंध उसे नहीं हो पाता।

अतः जैसे पूज्य आचार्य श्री ने अपने प्रत्येक उपदेश में समता रूपी अमृत को प्रवाहित किया है वैसे ही आपके जीवन का प्रत्येक क्षण समता की उपासना व प्रचार में तल्लीन है आपकी आत्म निष्ठा, साधना व सहनशीलता समतामयी परिणामों में निरंतर वृद्धि कर रही है।

❑

आचार्य आदिसागर जी महावीर कीर्ति जी विमलसागर जी की पूजा

परम पूज्य आचार्य शिरोमणि आदिसागरजी महाराज ।
जिनके पट्टाधीश कहाये महावीर कीर्ति गुरु राज ।
तिनके शिष्य महान विभूति विमल सिन्धु आचार्य महान् ।
आय विराजो हृदय हमारे, करूँ मैं बारंबार प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर, महावीर कीर्ति, विमलसागरेभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर, महावीर कीर्ति, विमलसागरेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर, महावीर कीर्ति, विमलसागरेभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

कंचन झारी प्रासुक जल भरि जन्म जरा मृत्यु हरना ।
आदि सिंधु आचार्य गुरु के चरणों में चित्त धरना ।।
महावीर कीर्ति आचार्य गुरु जो तीर्थ भक्त कहलाते हैं ।
विमल सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्य गन्ध मलयगिरी चन्दन भवाताप क्षय करना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित्त धरना ।।
महावीर कीर्ति आचार्य गुरु जो तीर्थ भक्त कहलाते हैं ।
विमल सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत खण्ड विवर्जित लीने अक्षय पद अनुसरना ।
आदिसिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित्त धरना ।। महावीर...

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चम्पा जूही चमेली कुसुम भ्रमर मन हरना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित धरना ।। महावीर...

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य नव्य पकवान रसीले क्षुधा व्याधि क्षय करना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित धरना ।। महावीर...

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग ज्योति प्रदीप समुज्ज्वल मिथ्यातम संहरना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित धरना ।।
महावीर कीर्ति आचार्य गुरु जो तीर्थ भक्त कहलाते हैं ।
विमल सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी पावक जारी अष्टकर्म रिपू जरना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित्त धरना ।। महावीर...

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाडिम केला आम आदि फल पक्व मिष्ट मन हरना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित्त धरना ।। महावीर...

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जलादि वसु द्रव्य चाव से कनक थाल संवरना ।
आदि सिन्धु आचार्य गुरु के चरणों में चित्त धरना ।। महावीर...

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

त्रय आचार्य महान को जोड़कर नत भाल।
हरो चतुर्गति दुख को गाऊं अब जयमाल ॥
जय पंचाचार धरे पवित्र, जयपंच महाव्रत दृढ़ चरित्र।
दश धर्म धरण गुप्ति सु तीन, जय बारह तप में हो प्रवीन ॥
जय षट् आवश्यक नित्यधार कचलोंच करत ममता निवार।
बाईस परिषह सहत घोर, सुध्यान ज्ञान तप में विभोर ॥
जय मूलोत्तर गुण वृंदलीन, उपसर्ग सहे निज आत्मलीन।
जय कुन्द कुन्द आम्नाय शुद्ध, जय ताके तुम रसक प्रसिद्ध ॥
जय सिंहवृत्ति निर्भय विहार, तप तपै मान तज के अपार।
जग में विख्यात मुनीश आप, हरते भुवि तल का आप ताप ॥
आदिसागर आचार्य श्रेष्ठ, महावीर कीर्ति तव शिष्य इष्ट।
आचार्य विमलसागर अपार, हम करते पुनि पुनि नमस्कार ॥

ॐ ह्रीं आचार्य आदिसागर महावीर कीर्ति विमलसागरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु के पूजन जाप से, मिटता कष्ट महान।
कर्म बंध ढीला पडे, अन्त मोक्ष पद जान ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।

आरती

मणिमय दीप सजाकर मैं तो आरती करूँ आचार्य की।
आदिसागरजी अंकलीकर चारित्र चक्रवर्ती पदधारी की ॥
छत्तीस मूलगुण पालनकर जिन वीतरागता दर्शायी।
ऊदगांव में धरी समाधि, स्वर्ग राह दिखलाई थी ॥
अपना पद आचार्य दिया, महावीर कीर्ति गुणधारी की।
आदिसागरजी अंकलीकर चारित्र चक्रवर्ती पदधारी की ॥ 1 ॥ मणि.
महावीर कीर्ति आचार्य हुए, जिन धर्म का डंका बजवाया।
दक्षिण उत्तर भरत खण्ड में, स्याद्वाद ध्वज फहराया ॥
सिंहनाद निर्भय जिन फूंका, बाल ब्रह्मव्रतधारी की।
आदिसागरजी अंकलीकर चारित्र चक्रवर्ती पदधारी की ॥ 2 ॥ मणि.
मेहसाना में धार समाधि, आतम ध्यान लगाया था।
पट्टाधीश किया घोषित, श्री सन्मति सिन्धु महान था ॥
बालयति यतिनायक गुरूवर, सूरि शिरोमणि राज की।
आदिसागरजी अंकलीकर चारित्र चक्रवर्ती पदधारी की ॥ 3 ॥मणि.
कुन्द-कुन्द की परम्परा के, तीनों रत्न महान हैं।
जिन शासन में महाविभूति, मानों ये अवतार हैं ॥
मुक्ति पथ दर्शक ये तीनों, परम्परा हितकार की।
आदिसागरजी अंकलीकर चारित्र चक्रवर्ती पदधारी की ॥ 4 ॥ मणि.

सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य परमेष्ठी श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज की पूजा

(प्रथम गणिनी आर्यिका विजयामति माताजी विरचित)

रत्नत्रय मण्डित गुरु,गुण गण के आगार ।
कलियुग में सतयुग किया, चिदानन्द आधार ॥ 1 ॥
धर्म शिरोमणि तीर्थसम, तम हरता रविराज ।
व्रताचरण शुद्धिकरन, पूजों पग उमगाय ॥ 2 ॥
आओ तिष्ठो हृदय में, चिदानन्द भूपाल ।
करुणा तेरी प्राप्त कर, हो जाऊँ भव पार ॥ 3 ॥

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य परमेष्ठिन श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कञ्चन कलश भरा ।
दे धारा तीन अखण्ड, भव संताप हरा
श्री सन्मति सिन्धु ऋषीश तेरा शरण गहा ।
पाऊँ निज लब्धि महान्, चरणन शीश धरा ॥

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व....।

मलयागिरि चन्दन सार, कुंकुम संग घिसा।
चरणों में दिया चढ़ाय, तीनों ताप नशा ॥
श्री सन्मति सिन्धु ऋषीश, तेरा शरण गहा।
पाऊँ निज लब्धि महान्, चरणन शीश धरा ॥

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व....।

अति सुरभित अक्षतलाय, पूजन थाल सजा।
अक्षयपद सुख के काज, चरणन पुंज धरा ॥ श्री सन्मति...

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्व....।

शिवपुर का यह उद्यान, नाना सुमन भरा।
सब काम व्यथा नश जाय, पूजत हर्ष जगा। श्री सन्मति...

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व....।

सदियों से किया उपाय, पर नहीं रोग नशा।
अब क्षुधा महा दुःख जाय, नेवज थाल भरा। श्री सन्मति...

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व....।

यह ज्ञान ज्योति तमहार, मिथ्यातिमिर नशा ।
ले घृतका दीप जलाय, चरणन अग्र धरा ॥
श्री सन्मति सिन्धु ऋषीश, तेरा शरण गहा ।
पाऊँ निज लब्धि महान्, चरणन शीश धरा ॥

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व....।

यह धूप दशाङ्ग बनाय, अग्नि में खेऊँ ।
दश विध के कर्म जलाय, शिवपुर राज करूं॥ श्री सन्मति..

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व....।

नाना सुरभित फल लाय, सुवरण थाल भरा ।
कर अष्टकर्म परिहार, शिवपुर राज करुं ॥ श्री सन्मति...

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व....।

सब आठों दरब मिलाय पावन अर्घ्य बना ।
पूजूँ धरि भक्ति भाव, अविचल थान मिला॥ श्री सन्मति...

ॐ ह्रूँ सिद्धान्त चकवर्ती श्री 108 सूरिप्रवर सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व....।

शान्ति धारा

गंगाजल की धार ले, अर्चन कर मुनिराय।
जन्म जरा मृतु नाश कर, पाऊँ शिवपुर वास ॥

''शान्तये शान्तिधारा''

पुष्पाञ्जलि

नाना विध के सुमन ले, पुष्पांजलि चढ़ाय।
काम बलि को नाश कर, आकुलता मिट जाय ॥

''इत्याशीर्वादः परि पुष्पाञ्जलिः क्षिपेत्''

जयमाला

आदि सिन्धु को नमन कर, महावीर कीर्ति गुणगाय।
सन्मति सिन्धु आचार्य की अब वरणूँ जयमाल ॥
कुन्द-कुन्द आचार्य की परम्परा शुभसार।
इन तीनों आचार्य की यही कड़ी आधार ॥

जय बाल ब्रह्मचारी मुनीश, तुम सूरि शिरोमणि गुण गनीश।
जय धर्म धुरन्धर धीर-वीर, जय करुणा सागर गुण गम्भीर ॥ 1 ॥
जय शान्त रुप मनहर ऋषीश, जय बाल ब्रह्मचारी प्रबुद्ध।
जय समता रस में लीन देव, तुम हो सुभट जीत्यो प्रवीण ॥ 2 ॥

श्री आदि सिन्धु आचार्य एक, जिन जन्म अंकली गांव लीन ।
ले स्वयं समाधि शान्त भाव, निज पद त्यागा हो निर्विकल्प ॥ 3 ॥
महावीर कीर्ति निज शिष्य एक, उनको अपना पद दिया नाथ ।
आचार्य हुए महावीर कीर्ति जिन, महसाना में धरि समाधि ॥ 4 ॥
तब अपना पद त्यागा कृपाल, अरु दिया आपको संघ भार ।
यह परंपरा अविरल अपार, चली रही गुरु तुमरे प्रसाद ॥ 5 ॥
तुम ज्ञान ध्यान तप में विभोर, निज आत्म शुद्धि में सदालीन ।
तन ममत त्याग तृष्णा निवार, संसार भोग किये सब त्याग ॥ 6 ॥
वात्सल्य भाव की सजग मूर्ति, चैतन्य चिदातम अचल रुप ।
उपसर्ग परीषह देख ध्यान, स्वमेव चरण में नमतभाल ॥ 7 ॥
जिन भक्त अनोखे गुरु भक्त, जिनवाणी माँ के वरद पुत्र ।
नित ज्ञान ध्यान में रत महान, पर भावों पर करते प्रहार ॥ 8 ॥
धर्मामृत वर्षण कर मुनीश, भव्यों की हरते मोह पीर ।
तुम सकल संयमी गुण निधान, व्रत शील करें जग को प्रदान ॥ 9 ॥
जो शुद्धाशुद्ध विचारहीन, उन घर आहार लेते न वीर ।
विधवा विवाह अन्तर्जाति, करते जो भी आगम विरुद्ध ॥ 10 ॥
उन घर में चर्या करें नाहि,आतम हित के विपरीत मान ।
छत्तीस मूल गुण धरें स्वामि, निर्भीक जगत में तजी मीत ॥ 11 ॥
हो अचल ध्यान में तप लगाय, तत्वों का करते नित विचार ।
आगम सागर में डूब-डूब,संचित अनुभव कर बने भूप ॥ 12 ॥

है नगर फफोतू धर्मशील, वहाँ जन्म लिया गुरुवर महान ।
तुम पिता सेठ प्यारे सुलाल, जयमाला माता करत प्यार ॥ 13 ॥
सब छोड़ दिया घर द्वार आप, अपनाया संयम सकलसार ।
श्री विमल सिन्धु आचार्य पाय, निर्ग्रन्थ बने ममता निवार ॥ 14 ॥
महावीर कीर्ति आचार्य देव, उनसे पायी शिक्षा अपार ।
आध्यात्म शास्त्र अरु अलंकार, व्याकरण ज्योतिषी मंत्र सार ॥ 15 ॥
तुम न्याय छन्द अरु धर्म शास्त्र, पढ़ लिया अनोखा समयसार ।
सब कुन्दकुन्द के रचित शास्त्र, जय धवला धवला पढ़ा आप ॥ 16 ॥
इस भाँति करें शुभ धर्मध्यान, अरु शुद्ध ध्यान पर लक्ष्य धार ।
विजया करती भक्ति अपार, गुरु चरणों में मम हो समाधि ॥ 17 ॥

धन्य-धन्य गुरुदेव तुम, करो आत्म कल्याण ।
भविक जनों के हो हितू, करते भव से पार ॥

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य सिद्धान्त चक्रवर्ती 108 सन्मति सागर गुरुचरणाभ्यां जयमाला पूर्णार्घ्यं अर्घ्यं निर्व...

हरो संकट संताप तुम, दो समता रस दान ।
धारा दूँ चरणन विषैं, मेटो भव सन्ताप ॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

नाना विध के सुमन ले, पुष्पांजलि चढ़ाय ।
काम दाह नाशे गुरु, अर्पण की गुणमाल ॥

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलि ॥

आरती

आचार्य सन्मति सिंधु की, हम आरती करने आये हैं
हम भक्ति करने आये हैं, हम संस्तुति करने आये हैं

1. तप त्याग हिमालय सा उन्नत, सागर से गहरा चिंतन है
गुरुदेव तुम्हारे चरणों से लग कर ही, महकता चंदन है
हम भी गुरु आपके चरणों में, निज पातक धोने आये हैं
हम भक्ति.....

2. दीपक बनकर मेरे मन में, आकर के गुरु प्रकाश करो
अपने जैसे ही सद्गुण से, चेतन का मेरे विकास करो
दर्शन पाकर गुरुवर हम तो, तुम सा ही होने आये हैं
हम भक्ति.....

3. जीवन ये उसका धन्य हुआ, जिसके सर पे गुरु छाया है
गुरु चरणों में जो झुकता है, वो ही ऊंचा उठ पाया है
हम आज तुम्हारे चरणों में, मस्तक ये धरने आये हैं।
हम भक्ति.....

❑

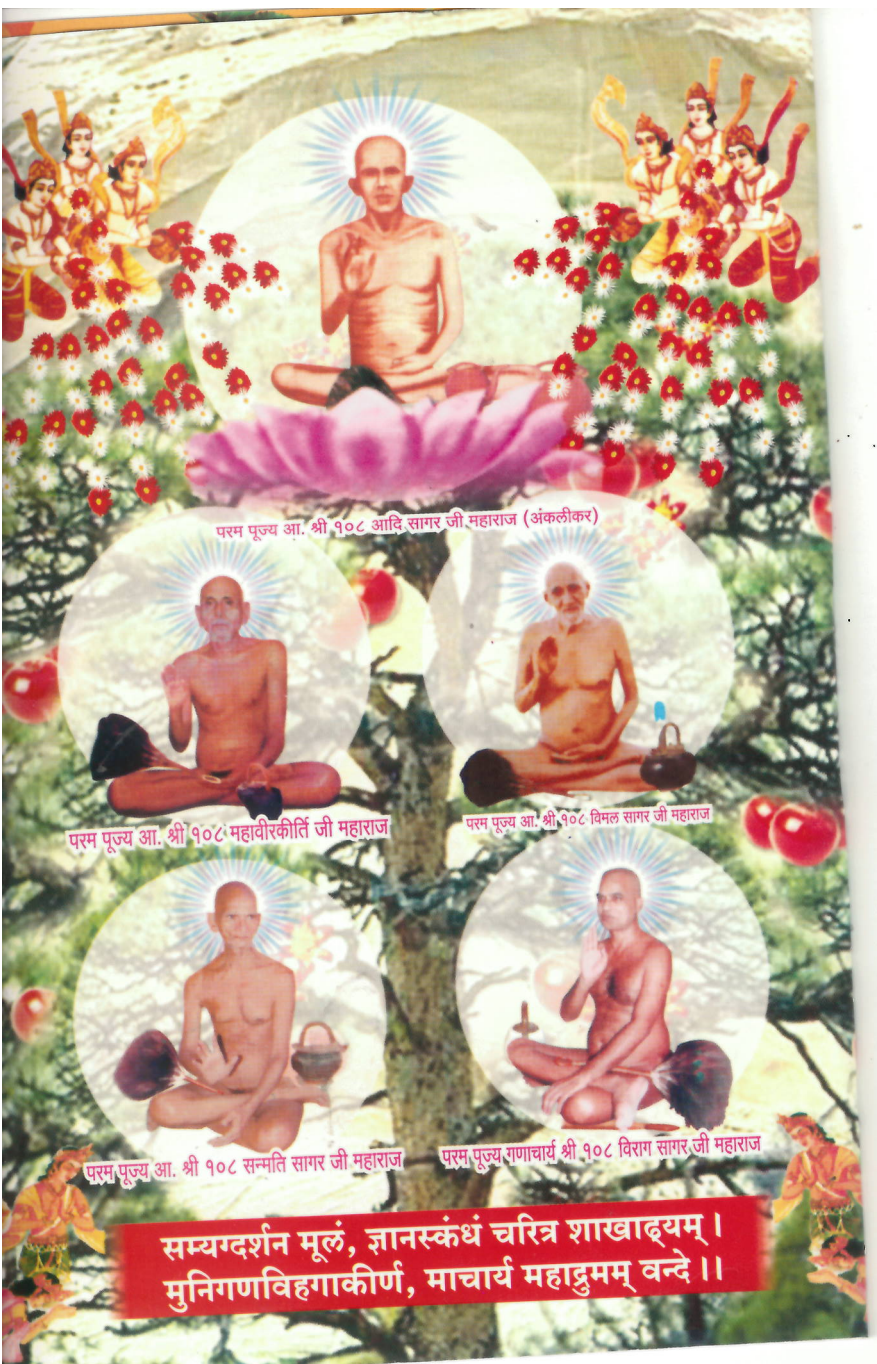
परम पूज्य आ. श्री १०८ आदि सागर जी महाराज (अंकलीकर)
परम पूज्य आ. श्री १०८ महावीरकीर्ति जी महाराज
परम पूज्य आ. श्री १०८ विमल सागर जी महाराज
परम पूज्य आ. श्री १०८ सन्मति सागर जी महाराज
परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज
सम्यग्दर्शन मूलं, ज्ञानस्कंधं चरित्र शाखाढ्यम्।
मुनिगणविहगाकीर्ण, माचार्य महाद्रुमम् वन्दे।।

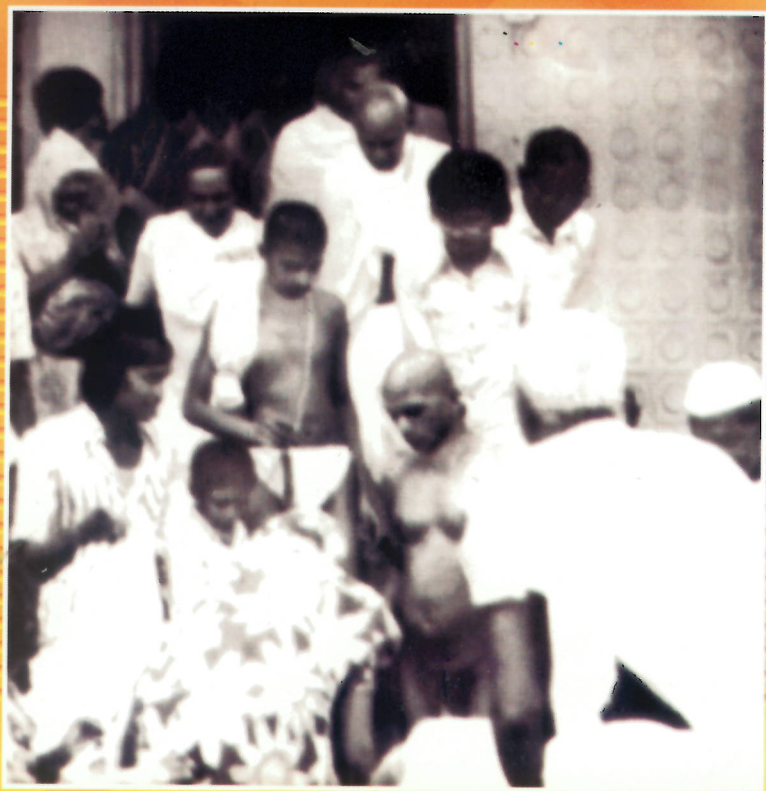

१९८० दुर्ग, चातुर्मास में परम पूज्य
आचार्य श्री सन्मति सागरजी के साथ पूज्य क्षुल्लक पूर्ण सागरजी तथा
पास में खड़े हुऐ सूरजमलजी ब्रह्मचारी